भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 20 | उदयपुर रविवार 15 अक्टूबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

ध्यान से अतीन्द्रिय चेतना का जागरण

– आचार्य महाप्रज्ञ –

मोह का अहंकार न सूरज मिटा सकता है और न चांद। व्यक्ति शराब पीता है तो नशे में चला जाता है। नशे में कुछ पता ही नहीं चलता। मुंह पर लगाने वाली दवा दर्पण पर लगा दी जाती है। चेतना में जो विकार है वह मोह के कारण है। दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं- रागात्मक प्रवृत्ति वाले और द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले। जो रागात्मक प्रवृत्ति वाला है उसे ज्यादा से ज्यादा चलना चाहिए। ग्रामानुग्राम विचरण करना चाहिए। उसका एक जगह पर बैठना अच्छा नहीं है। उसके लिए ज्यादा टहलना, घूमना, विहार करना अच्छा है। रागात्मक प्रवृत्ति वाला ज्यादा बैठा रहेगा तो राग बढ़ेगा। खड़े-खड़े ध्यान करना रागात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए बहुत उपयोगी है। द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए बैठे-बैठे ध्यान करना उपयोगी है। रागात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए नीले रंग का ध्यान करना अच्छा है। द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए हरे रंग का ध्यान उत्तम है। यह ध्यान का सैद्धान्तिक पक्ष है।

एक ज्योतिषी ने एक भाई के लिए भविष्यवाणी की- तुम राजा बनोगे। दूसरे के लिए भविष्यवाणी की- तुम भिखारी बने रहोगे। राजा बनने वाला आलस्य और प्रमाद में डूब गया। भिखारी बनने वाले ने अपने पुरुषार्थ का प्रयोग किया। परिणाम यह हुआ- राजा बनने वाला भिखारी बन गया और भिखारी बनने वाला राजा बन गया।

आचार्य तुलसी ने सीधे-सपाट शब्दों में कहा- 'मेरा अनुभव यह है कि आदमी सबसे जटिल है। उसे संभालना, बदलना बहुत कठिन है।' जब तक मोह नहीं मिटता, तब तक आदमी नहीं बदलता। मोह प्रबल है तो आदमी नहीं बदलेगा। मोह कम हुआ और आदमी बदलना शुरू हो जाएगा। बदलाव की निश्चित शर्त है- मोह कम होना चाहिए। समस्या यह है कि पदार्थ जगत इतना बड़ा है कि न मोह कम होता है और न आदमी बदलता है।

नगाड़ा बजे तो नट ऊपर चढ़ सकता है। मोह मिटे तो मनुष्य का ऊर्ध्वारोहण हो सकता है, उसका चरित्र बदल सकता है। हमारी सबसे बड़ी समस्या है मोह। जब मनुष्य मोहग्रस्त होता है, उसे कुछ भी पता नहीं चलता। मोह का ऐसा अहंकार छा जाता है जिसे न सूरज मिटा सकता है और न चांद मिटा सकता है। दुनिया के तम हरण करने वाला सूरज मोह के तम को मिटाने में कभी सफल नहीं हो सकता। मोह का तम मोह के विलय से ही समाप्त हो सकता है।

यदि हम अपनेआप को बदलना चाहते हैं तो हमें मोह को कम करने का उपाय सोचना चाहिये। ऐसा उपाय सोचना चाहिये जो मोह के सघन अंधकार को दूर कर सके। मोह को कम करने का एक उपाय है चंचलता को कम करना। चंचलता मोह को सहारा देती है। जैन दर्शन में आठ कर्म माने गये हैं। उनमें एक है -मोह कर्म।

मोह कर्म को समझाने के लिए शराब का उदाहरण दिया गया है। व्यक्ति शराब पीता है तो नशे में चला जाता है। नशे में कुछ पता ही नहीं चलता। मुंह पर लगाने वाली दवा दर्पण पर लगा दी जाती है। जब मोह प्रबल होता है, चेतना विकृत होती है, तब भी यही स्थिति बनती है। चेतना में जो विकार है वह मोह के कारण है।

मन की गति इतनी तेज है, जितनी शायद बिजली की भी नहीं है। अभ्यास के द्वारा चंचलता को कम किया जा सकता है। संकल्प करें- मैं दस मिनिट बिल्कुल स्थिर रहूंगा। हिलूंगा-डुलूंगा नहीं। अचल और अप्रकंप रहूंगा। धीरे-धीरे इस अभ्यास को बढ़ाएं। एक घण्टा-डेढ़ घण्टा स्थिर रहने का अभ्यास सध जाए तो आप मान लें कि आपने मोह के अभेद्य किले पर प्रहार करना शुरू कर दिया है। जैसे-जैसे संयम और स्थिरता सधेगी, मोह कम होना शुरू हो जाएगा। 'मनुष्य क्यों नहीं बदलता?' यह प्रश्न समाहित हो जाएगा। 'मनुष्य बदल सकता है' इस नये विश्वास और नई आस्था की सृष्टि होगी।

रामायण और महाभारत का काल देखें। इतिहास और पुराण जितने उपलब्ध हैं, उन्हें देखें तो यह नहीं कहा जा सकता है कि आदमी का चरित्र बदला है और यह भी नहीं कहा जा सकता है कि आदमी बदला नहीं है। राम, महावीर, बुद्ध तथा अनेक बड़े-बड़े आचार्य और महापुरुष हुए हैं जिन्होंने राज्य को त्याग दिया, सर्वस्व छोड़ दिया, अकिंचन जीवन बिताया। उनकी वाणी और संकेत पर लाखों लोग सब कुछ करने को तैयार रहे हैं। इसलिए यह सापेक्ष बात है- आदमी बदलता भी है और आदमी नहीं भी बदलता। दोनों बातें स्पष्ट हैं।

मनुष्य सुख से प्यार करता है, दुःख से द्वेष करता है। वह दुःख से दूर भागना चाहता है। न उसे मौत पसंद है, न बुढ़ापा पसंद है और न रोग पसंद है किन्तु रोग भी आता है, बुढ़ापा और मौत भी आती है। यह प्राणी की मनोवृत्ति है कि वह मौत से डरता है। उसे थोड़ा-सा कुछ हो जाता है तो वह तत्काल डॉक्टर और दवा की शरण लेना चाहता है। रोग न आए, बुढ़ापा न आए उसके लिए न जाने कितना प्रयत्न करता है। बुढ़ापे का पहला लक्षण है- केश सफेद होना। जो व्यक्ति सुख-स्वादक है, निरन्तर चाहता है कि सुख मिले, साता मिले, आराम मिले, कहीं कोई कष्ट न आए, इस प्रकार की भावना वाला व्यक्ति कभी बदल नहीं सकता। वह अधिक विकृत स्वभाव की ओर चला जाता है।

राम जैसे शक्तिशाली व्यक्ति के सामने राज्य का कोई प्रश्न ही नहीं था किन्तु राम राग से विराग की कक्षा में चले गये। भूमिका बदल गई। उनमें शोक का स्थायी भाव प्रधान नहीं था इसलिए संघर्ष नहीं हुआ। दूसरी स्थिति सामने आई। राम ने कहा- 'मैं राज्य नहीं लूंगा।' भरत ने कहा- 'मैं राजा नहीं बनूंगा।'

ध्यान का व्यावहारिक उद्देश्य है स्वभाव परिवर्तन। प्रेक्षाध्यान स्वभाव परिवर्तन का प्रयोग है। इससे स्वभाव बदलता है। जैसे-जैसे अंतरात्मा के साथ सम्बन्ध जुड़ेगा, वैसे-वैसे स्वभाव में परिवर्तन आएगा। जब व्यक्ति केवल बाहर को देखता है, घृणा, ईर्ष्या, राग-द्वेष आदि की मनोवृत्ति उभर आती है। दूसरे को देखता है, तब आक्रोश होता है, आरोप-आपेक्ष की भावना जागती है। जब व्यक्ति दूसरे से हटकर अपना निरीक्षण करता है, अपनी समीक्षा और परीक्षा करता है तब अपनी दुर्बलताओं का परिष्कार होता है। व्यक्ति आत्म-निरीक्षण, आत्म-परीक्षा और आत्म-समीक्षक इन तीन भूमिकाओं में आता है तो निश्चित ही जो बुरा स्वभाव है, उसकी जड़ें कट जाती हैं, अच्छे संस्कार का निर्माण शुरू हो जाता है।

ध्यान से स्वास्थ्य का लाभ भी होता है। स्वास्थ्य को भी गौण नहीं किया जा सकता। स्वास्थ्य साधना का आधार है। यदि स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तो ज्ञान, ध्यान, तपस्या, आराधना सबमें बाधा आती है। अरोग्य को पहला सुख माना गया है और वह ध्यान से उपलब्ध हो सकता है। आज धार्मिक जगत में ही नहीं, पाश्चात्य जगत में भी ध्यान का प्रयोग मुख्यतः स्वास्थ्य के लिए ही चल रहा है। आरोग्य की उपलब्धि में ध्यान उपयोगी बनता है, इसलिए स्वास्थ्य को चाहने वाले ध्यान की शरण में आते हैं।

ध्यान से मन की शान्ति बनी रहती है। मनुष्य अनेक झंझटों और तनावों से बच जाता है। ध्यान के द्वारा अतीन्द्रिय चेतना का जागरण किया जा सकता है। ध्यान की सघन साधना के बाद अतीन्द्रिय शक्तियां जागृत होती हैं। यह एक अनुभूत सच है। ध्यान के ये पांच उद्देश्य स्पस्ट हैं- संवर निर्जरा, स्वभाव-परिवर्तन, आरोग्य, मानसिक शान्ति और अतीन्द्रिय चेतना का विकास। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए ध्यान का प्रयोग करणीय है। जो संन्यासी अथवा मुनि बने हैं, उनके लिए ध्यान परम आचरणीय, परम आदरणीय और परम करणीय कर्त्तव्य है।

ध्यान के दो पक्ष हैं- सैद्धान्तिक और प्रायोगिक। सैद्धान्तिक पक्ष में भी जान लेना चाहिए। ध्यान का कौनसा प्रयोग किस समस्या के समाधान में अधिक उपयोगी है, यह जानना अपेक्षित है। समस्या के सन्दर्भ में ध्यान के विशिष्ट प्रयोग किये जाते हैं तो समाधान भी मिलता है और ध्यान के प्रति आकर्षण भी बढ़ता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में समस्याएं आती हैं। समाधान का सूत्र ज्ञात होता है तो समस्या चिन्ता का कारण नहीं बन पाती।

दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं- रागात्मक प्रवृत्ति वाले और द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले। ध्यान का प्रयोग निर्जरा के लिए सामान्य प्रयोग है किन्तु समस्या के सन्दर्भ में ये विशिष्ट बन जाता है। कहा गया- जो रागात्मक प्रवृत्ति वाला है उसे ज्यादा से ज्यादा चलना चाहिए। ग्रामानुग्राम विचरण करना चाहिए। उसका एक जगह पर बैठना अच्छा नहीं है। उसके लिए ज्यादा टहलना, घूमना, विहार करना अच्छा है। रागात्मक प्रवृत्ति वाला ज्यादा बैठा रहेगा तो राग बढ़ेगा। खड़े-खड़े ध्यान करना रागात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए बहुत उपयोगी है। द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए बैठे-बैठे ध्यान करना उपयोगी है। रागात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए नीले रंग का ध्यान करना अच्छा है। द्वेषात्मक प्रवृत्ति वाले के लिए हरे रंग का ध्यान उत्तम है। यह ध्यान का सैद्धान्तिक पक्ष है।

जो रागात्मक प्रवृत्ति वाला है उसे श्मशान में, अशुचि स्थान में ध्यान करना चाहिए। उसके लिए अशौच भावना का विधान है। हड्डियां दिखाना, मुर्दा दिखाना, कलेवर दिखाना, शरीर के भीतर का वर्णन करना जिससे रागात्मकता के उफान पर पानी का छींटा पड़ जाए। इस विषय का बहुत मनोवैज्ञानिकों द्वारा विश्लेषण किया गया है। रागात्मक प्रवृत्ति वाले को यह बताया जाता है - तुम जिस शरीर पर आसक्त हो, जिसकी प्रशंसा करते हुए नहीं थकते, यदि उस पर यह चमड़ी न हो तो यह शरीर कुत्ते से भी ज्यादा दुत्कारने जैसा हो जाएगा। हमें स्वयं यह विश्लेषण करना चाहिए- किस समस्या के लिए कौन सा उपाय काम में लें। जहां रागात्मकता है, वहां मनोज्ञता की बात करोगे तो राग अधिक बढ़ जाएगा। जहां द्वेषात्मक प्रवृत्ति है, वहां मनोज्ञ स्थल पर ध्यान करना चाहिए। द्वेष घृणात्मक होता है। वहां अमनोज्ञ स्थितियां होंगी तो द्वेष उभर आएगा।

प्रयोग इसलिए किये जाते हैं कि विघ्न और बाधाएं न आए। जब हम मंगल भावना का प्रयोग करते हैं, तब मंगल स्वतः भीतर से प्रकट होता है, आने वाली बाधाएं भी विलीन हो जाती हैं। यह विश्वास जरूरी है कि उपाय के द्वारा हर उपाय का शमन किया जा सकता है। कोई उपाय न करें, हाथ-पर-हाथ धर कर बैठ जाएं तो कुछ नहीं होगा। प्रसिद्ध कथा है- एक ज्योतिषी ने एक भाई के लिए भविष्यवाणी की- तुम राजा बनोगे। दूसरे के लिए भविष्यवाणी की- तुम भिखारी बने रहोगे। राजा बनने वाला आलस्य और प्रमाद में डूब गया। भिखारी बनने वाले ने अपने पुरुषार्थ का प्रयोग किया। परिणाम यह हुआ- राजा बनने वाला भिखारी बन गया और भिखारी बनने वाला राजा बन गया।

कोई भी समस्या आए, निराश न हों, हताश न बनें, हाथ-पर-हाथ रखकर न बैठें। भगवान महावीर ने इस सन्दर्भ में पुरुषार्थ का कितना सुन्दर सूत्र दिया है- तुम अपने पुरुषार्थ के द्वारा कर्म की उदीरणा कर सकते हो, अपवर्तन और संक्रमण कर सकते हो, विपदा के क्षणों को सुख में बदल सकते हो। स्वभाव-परिवर्तन और भाग्य के निर्माण के इस सूत्र का मूल्यांकन करें। जिनके सामने स्वभाव परिवर्तन का यह महान दर्शन है, वह सब कुछ कर सकता है। अपने जीवन में बदलाव ला सकता है। अपने शुभ भविष्य का निर्माण कर सकता है। कठिन लगने वाली बात भी उसके लिए सरल बन जाती है। जो व्यक्ति समस्या के समाधान के प्रयोगों को जानता है, अभ्यास और अनुशीलन करता है वह ध्यान की उपयोगिता का जीवन्त निदर्शन बन जाता है।

शरीर दो समस्याओं के साथ जुड़ा हुआ है- परिग्रह और अपरिग्रह। परिग्रह का मूल है शरीर और अपरिग्रह का मूल है शरीर। मूर्च्छा और मोह का मूल है शरीर और अमूर्च्छा का मूल है शरीर। परिग्रह शरीर से ही पैदा होता है। परिग्रह का प्रयोग होते ही उपकरण हमारे सामने आते हैं- मकान, परिवार, धन-सम्पदा। परिग्रह की जड़ है हमारा शरीर। दूसरा है कर्म का संस्कार, कर्म का संचय। कर्म का इतना बड़ा खजाना है, इतना बड़ा भण्डार है कि दुनिया में इतना बड़ा दूसरा नहीं मिलता। तीसरा है उपाधि। उपाधि को छोड़ना कठिन तो है पर सरल भी हो सकता है। शरीर के ममत्व को छोड़ना सबसे कठिन है किन्तु अपरिग्रह की साधना भी शरीर से होगी।

प्रेक्षाध्यान का मूल आधार है-कायोत्सर्ग। जो कायोत्सर्ग को नहीं, वह प्रेक्षा के मर्म को नहीं समझता। कायोत्सर्ग का मूल प्राण है- ममत्व का विसर्जन, भेद विज्ञान। प्रेक्षाध्यान केवल एकाग्रता की पद्धति नहीं, केवल शिथिलीकरण की पद्धति नहीं, केवल तनाव-मुक्ति की पद्धति नहीं, वह तो आत्मोत्सर्ग यानी शरीर और आत्मा दोनों के भेद-विज्ञान की पद्धति है। हमारी यात्रा शुरू होगी शरीर से। पहला स्तर है शरीर और अन्तिम स्तर है आत्मा। बहुत लम्बी यात्रा है आत्मा तक पहुंचने की।

हमारी साधना शरीर को सताने के लिए नहीं, शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं, शरीर के प्रति लापरवाह रहने की नहीं किन्तु शरीर के प्रति जो गहरा ममत्व है, जो गहरी मूर्च्छा जुड़ी है, उससे मुक्ति पाने के लिए है।

-शेष पृष्ठ सात पर

समीक्षा

समुद्र व्यापार और व्यापारियों का संघर्ष

समुद्र व्यापार के महत्व और सामर्थ्य को हमें समझना चाहिए। पाली, प्राकृत और संस्कृत ग्रंथों में यत्किंचित जानकारियां मिलती हैं। मणिमेखला, अगस्तिमत, रत्नपरीक्षा सहित सुलेमान सौदागर का विवरण, चतुर्भाणि का महत्व तब समझ में आया जब मैंने सुदूर बृहत्तर भारत में खड़े मंदिरों और भारतीय मतों को अपनी आंखों से देखा! ऋषि अगस्त्य, भूलोकमल्ल सोमेश्वर, आचार्य भुवनदेव और आचार्य मेरूतुंग की धारणाएं तब गले उतरती हैं जब विदेश से आने वाले जहाजों और बंदरगाह या वेला तट की समृद्धि देखने को मिलती है और, तभी किसी यात्री का आना भी बड़ा लगता है! समुद्र मंथन का अर्थ भी तभी ज्ञात हो सकता है।

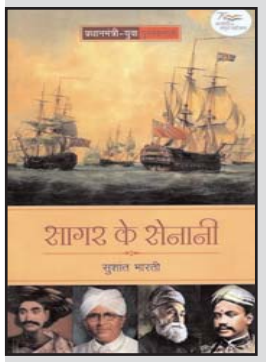

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में समुद्र को केवल रत्नाकर के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह जानकर भी आंखें नहीं मूंदी जा सकती है कि समुद्र पर पांव रखने से कोई बड़ी चूक हो जाएगी। गिरमटिया बनाकर लोगों को बाहर भेजने की बात भी सामने आती है। लेकिन, यह बड़ा पक्ष है कि समुद्र व्यापार के मायने थे। पोतों से शेखावाटी के पोतदारों की एक पहचान ही बन गई। अंग्रेजों ने समुद्री व्यापार को किस रूप में लिया और तब के व्यापारियों ने क्या रणनीति तैयार की! यह एक अनोखा संघर्ष था जो जमीन नहीं, पानी पर तय हुआ। नियंत्रण की नीति और छुटकारे की कामना, कर और कारावास से बचाव... कई पक्ष हैं जिनको जानना कम रोचक नहीं।

व्यापारियों के विषय में लिखना पढ़ना बहुत कम हो गया है। मैं जब छोटा था, तब सेठियों, शाहों, सार्थवाहों, संघवियों की समाज और शासकीय सेवाओं को किस्सागोई के रूप में कहा सुना जाता था। बिरधीचंदजी सा. चपलोत बहुत सुंदर तरीके से 74।। शाहों के किस्से कहते थे। वस्तुपाल, तेजपाल, भामाशाह, जगडू शाह, सुराशाह, भैसाशाह, लोकाशाह... के बारे में जानकारी है!

यह सब याद आया जब कि प्रियवर श्री सुशांत भारती ने इस विषय पर एक सुंदर पुस्तिका लिखी और मुझे भेजी। सुशांत का 2021 में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की प्रधानमंत्री युवा पुस्तकमाला परियोजना में चयन हुआ था और उनने बड़े प्रयास से एक अल्पज्ञात विषय को ससंदर्भ कलमबद्ध किया। सुशांत को बधाई और उन मित्रों को मशविरा है कि जो इस विषय को जन्म चाहते हैं, वे सुशांत की यह कृति पढ़ें और मूल्यांकन करें। भारत एक समृद्ध देश रहा तो उसके पीछे श्रमिक से लेकर व्यापारियों तक की बड़ी भूमिका रही है।

पुस्तक - सागर के सेनानी - सुशांत भारती, प्रधानमंत्री युवा पुस्तकमाला, आजादी का अमृत महोत्सव प्रकाशन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली, 2022 ई.।

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

छायानट का पुतुल कला विशेषांक

लखनऊ की उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी से विगत 42 वर्षों से प्रकाशित अप्रेल-जून 2021 का यह अंक पुतुल कला विशेषांक के रूप में हाल ही में निकला है। पुतुल कला से तात्पर्य कठपुतली कला से है। सम्पादक राजवीर रतन ने बड़ी मेहनत तथा सूझबूझ से देश के विविध अंचलों में प्रचलित विभिन्न पुतुल शैलियों पर अधिकारी विद्वानों के लेख प्रकाशित किये हैं।

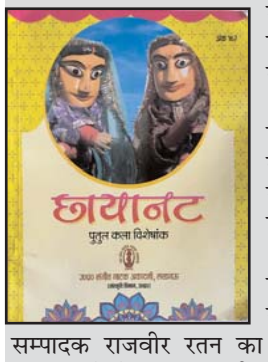

इनमें कर्नाटक, असम, पश्चिम बंगाल, केरल में प्रचलित कठपुतली कला की विविध शैलियों पर क्रमश: अनुपमा होसकेरे, डॉ. मौसुमी भट्टाचार्य, सुदीप गुप्ता तथा रामचन्द्र राहुल पुलवर के शोध लेख विशिष्ट जानकारी लिए हैं।

ऐसे 15 के करीब विषयगत लेखों के अलावा प्रदीपनाथ त्रिपाठी लिखित उत्तरप्रदेश की गुलाबो सुताबो पुतली परम्परा तथा दादी डी. पद्मजी के साथ सम्पादक राजवीर रतन का साक्षात्कार पठनीय हैं। इसके अलावा डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित राजस्थानी व भारतीय कठपुतली कला शीर्षक आलेख देश-विदेश में हो रहे कठपुतली प्रयोगों से लेकर इस कला के उद्गम से विकास तक का 18 पृष्ठीय परिशिष्ट अनेकों ऐसी जानकारियों से सन्दर्भित है जो प्राय: किसी और ने रेखांकित नहीं की है।

अपने सम्पादकीय में उल्लेखनीय राजवीर रतन की यह टीप- ''उदयपुर के डॉ. महेन्द्र भानावत अपनेआप में एक संस्था और पुतुल और परम्परागत लोकविधाओं के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान हैं। मुझे यह गर्व है कि उन्होंने बड़ी सहजता से छायानट के लिए लेख लिखकर भिजवा दिया। उनका यह लेख न सिर्फ राजस्थानी अपितु एक तरह से पूरी भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुतुल कला को व्याख्यायित करने के साथ उद्घाटित करता है।'' (पृ. 7)

उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी, विपिन खंड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित 230 पृष्ठीय मात्र 50 रूपये मूल्य का यह अंक शोधार्थियों के लिए भी संग्रहणीय तथा शोधानुसंधान के कई गवाक्ष तैयार करने की सामर्थ्य देता है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

काव्या का जन्मोत्सव

काव्या मेहता के 27वें जन्म दिवस पर केक कटाई में सम्मिलित डॉ. तुक्तक भानावत, जितेन्द्र मेहता, डॉ. महेन्द्र भानावत, काव्या मेहता, डॉ. कहानी मेहता एवं रंजना भानावत।

ओसवाल सभा के चुनाव में प्रकाश कोठारी बने अध्यक्ष

डॉ. तुक्तक भानावत को मिले सर्वाधिक वोट

उदयपुर (ह. सं)। ओसवाल सभा के रविवार को ओसवाल भवन में हुए चुनाव के परिणाम देर रात घोषित किए गए। सभा के इस चुनाव को लेकर जबर्दस्त क्रेज था और अध्यक्ष से लेकर कार्य परिषद सदस्य बनने के लिए पूरा उत्साह व जोश रहा। अलग-अलग ग्रुप में पिछले दिनों से जबर्दस्त प्रचार-प्रसार दिन रात किया जा रहा था।

रात को लगभग 12.45 बजे घोषित परिणाम के अनुसार अध्यक्ष पद पर प्रकाश कोठारी ने मनीष गलुण्डिया को 323 मतों से हराकर जीत अपने नाम की। प्रकाश कोठारी को 1279 जबकि मनीष गलुण्डिया को 956 मत मिले। अन्य अध्यक्ष पद के उम्मीदवार गौतम प्रकाश गांधी को 146, कुंदनमल भटेवरा को 66 तथा अजय नलवाया को 58 मत मिले।

इसी प्रकार कार्यपरिषद सदस्य में डॉ. तुक्तक भानावत को 1433 मत मिले। डा. तुक्तक ऐसे सदस्य है जिन्होंने कार्यपरिषद में सर्वाधिक वोट प्राप्त करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सभा के चुनाव में 50 कार्यपरिषद सदस्यों के लिए 120 जने मैदान में थे। प्रत्येक मतदाता को अनिर्वाय रूप से 40 वोट देने और अधिकतम 51 वोट देना तय किया गया था।

कार्यपरिषद सदस्यों में डॉ. तुक्तक भानावत को 1433, अंशुल मोगरा को 1423, आनंदीलाल बम्बोरिया को 1354, कमल कोठारी को 1349, मनीष नागौरी को 1346, जिनेन्द्र मेहता को 1344, वर्धमान मेहता को 1313, सुमन कोठारी को 1312, तेजसिंह भण्डारी को 1307, साधना मेहता को 1303, नरेन्द्र कोठारी को 1296, गिरीश मेहता को 1295, मनीष गन्ना को 1294, अनिता भाणावत को 1288, कुलदीप मेहता को 1287, धीरज भाणावत को 1278, अशोक कोठारी को 1268, अनिता गांधी को 1251, फतेहलाल कोठारी को 1246, नरेन्द्र चौधरी को 1241, महेश नलवाया को 1226, माणचन्द्र जारोली को 1225, हिमांशु मेहता को 1204, फतेहसिंह मेहता को 1200, अविनाश चावत को 1197, ललित मुर्डिया को 1194, अशोककुमार मेहता को 1181, कमलेश पोखरना को 1169, मनीष मल्हारा को 1169, मुकेश मोगरा को 1166, किरण पोखरना को 1156, सुधीर मेहता को 1156, अजय धींग को 1152, सुरेन्द्र मोगरा को 1148, उर्मिला भण्डारी को 1144, वीरेन्द्र नागौरी को 1144, कल्याण जारोली को 1143, विनोद गदिया को 1137, ललितकुमार जैन को 1132, अंकिता नलवाया को 1129, ललित भण्डारी को 1122, पंकज कोठारी को 1121, प्रकाश गांधी को 1119, देवेन्द्र भाणावत को 1118, मनोज मुणेत को 1116, दिलीपकुमार कण्ठालिया को 1115, राजेन्द्र भूतालिया को 1114, स्नेहलता मोगरा को 1108, नीता मेहता को 1101 तथा नवरत्न कोठारी को 1096 मत मिले।

डॉ. तुक्तक वाइस प्रेसीडेंट व आनंदीलाल सेक्रेटी चुने गए

उदयपुर (ह. सं.)। ओसवाल सभा की कार्यकारिणी के चुनाव 15 अक्टूबर को ओसवाल भवन में हुए। इसमें विवाद के बीच दिलचस्प मोड तब आ गया जब नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश कोठारी को ओसवाल सभा के निवर्तमान अध्यक्ष कन्हैयालाल मेहता डूंगला वाला ने आकर शपथ दिलाई।

इससे पूर्व सुबह चुनाव अधिकारी अरुण कोठारी की देखरेख में ओसवाल भवन में लगे ताले खुलवा चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई। दोपहर 2 से 5 बजे तक मतदान हुआ। मतगणना के बाद कार्यकारिणी में चुने गए पदाधिकारियों को थोब की बाड़ी श्रीसंघ के अध्यक्ष मनोहरसिंह नलवाया ने शपथ दिलाई।

किसे मिले कितने वोट :

उपाध्यक्ष पद पर डॉ. तुक्तक भानावत को 35, सचिव पद पर आनंदीलाल बम्बोरिया को 35 वोट मिले। सहमंत्री मनीष नागौरी निर्विरोध निर्वाचित हुए। कोषाध्यष पद पर फतहसिंह मेहता को 36 वोट, भंडार संरक्षक पद पर फतहलाल कोठारी को 36 वोट मिले। हिसाब निरीक्षक पद के लिए अंशुल मोगरा निर्विरोध निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी सदस्य के लिए अशोककुमार मेहता को 36, किरण पोखरना को 36, मुकेश कुमार मोगरा को 36 व सुमन कोठारी को 35 वोट मिले। उपाध्यक्ष पद पर एक अन्य प्रत्याशी कुलदीप मेहता को 1 वोट मिला तो कार्यकारिणी सदस्य के लिए साधना मेहता को 1 वोट मिला। चुनाव में 36 लोगों ने मतदान किया।

इस अवसर पर नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने कहा कि अब चुनाव की प्रक्रिया पूरी हो गई और सब मिलकर समाज के विकास के लिए काम करने और आगे बढ़ाने में जुट जाए। जो वायदे किए हैं उन्हें हमें पूरा करना है। संचालन आलोक पगारिया ने किया।

पत्रों के आलोक में (11)

रामकुमार वर्मा, इलाहाबाद का पत्र

रामकुमार वर्मा का इलाहाबाद उनके समय में हिन्दी साहित्य का तीर्थ माना जाता रहा। यहीं निराला, महादेवी वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जैसे महारथी भी हुए। अश्कजी जब उदयपुर हिन्दुस्तान जिंक में आये तब एक रात भारतीय लोककला मण्डल में भी उनके सम्मान में गोष्ठी रखी गई थी। रामकुमार वर्मा नाटककार, कवि तथा साहित्य-इतिहास लेखन के साथ-साथ शिक्षा क्षेत्र में भी बड़ी उपलब्धि लिये चर्चित रहे। वहां के विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रोफेसर के साथ ही विदेश में भी उनकी शैक्षिक देन रेखांकित रही।

उत्तरप्रदेश की हिन्दी ग्रन्थ अकादमी तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी के अध्यक्ष पद पर रहते उन्होंने इन संस्थानों को बड़ा सुयश दिलाया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। भारतीय लोककला मण्डल में रहते मैं उन्हें अपने सम्पादन में प्रकाशित मासिक पत्र 'रंगायन' निरन्तर भेजता रहा। उसी के सम्बन्ध में उनका 28 अगस्त 1981 का लिखा पत्र मेरे पास सहेजा हुआ है जिसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रिय डॉ. महेन्द्र

'रंगायन' के माध्यम से जो आप लोक-साहित्य और लोक-कला के अज्ञात और अपरिचित प्रसंगों का उद्घाटन कर रहे हैं उसे मैं राष्ट्रीय महत्त्व की निधि समझता हूं। इसके लिए मेरे शतश: साधुवाद स्वीकार कीजिये।

भवदीय

रामकुमार शर्मा

डॉ. 'जुगनू' को टैस्सीटोरीश्री सम्मान

उदयपुर (ह. सं.)। आर्कियोलॉजी एंड एपिग्राफी सोसायटी, राजस्थान का प्रतिष्ठित एलपी टैस्सीटोरीश्री सम्मान इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' को दिया गया। जोधपुर में हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में पूर्व सांसद गजसिंह ने राजस्थान की पुरातात्विक संपदा और विरासत के संरक्षण पर जोर दिया और इटली के सुप्रसिद्ध इतिहासकार एल. पी. टैस्सीटोरी की स्मृति में स्थापित सम्मान दिया। पैर में चोट के कारण डॉ. जुगनू समारोह में नहीं जा सके। सोसायटी के अध्यक्ष अलीगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बी. एल. भादानी ने उनके योगदान को रेखांकित करते कहा कि उन्होंने राजस्थान के सैकड़ों शिलालेखों, रजतपत्रों, ताम्रपत्रों और अन्य दस्तावेजों को खोजकर अनुवाद सहित प्रकाशित कर आने वाली पीढ़ियों के लिए शोध का जो मार्ग प्रशस्त किया है, वह अपूर्व है। राजस्थान के हर क्षेत्र के शिलालेख और ताम्रपत्रों का उन्होंने साधिकार पठन और विवेचन किया है। अकेले व्यक्ति का यह योगदान चिरस्थाई रहेगा। उल्लेखनीय है कि डॉ. जुगनू अपने शैक्षिक और साहित्यिक योगदान के लिए राजस्थान, पंजाब और गुजरात के राज्यपाल सहित राष्ट्रपति से सम्मानित हैं। इतिहास, कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में उनकी लगभग 200 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

स्मृतियों के शिखर (173) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विभिन्न जातियों में सत परीक्षण देता महिला समुदाय

सत अर्थात् सच को उगवाने, झूठ-सच का पता लगाने के लिए हमारे यहां कई रूपों में परीक्षा लेने के प्रावधान, उपाय याकि तौरतरीके प्रचलन में हैं। इनमें सर्वाधिक रूप में तो अग्नि की साक्षी में ली जाने वाली परीक्षा ही अति प्रचलन में है। रामायण काल में राम ने सीता की अग्नि-परीक्षा ली थी जिससे सीता का उज्ज्वल चरित्र भारतीय जनमानस में प्रतिष्ठित हो सका और सीता नारी-वर्ग की आदर्श के रूप में सर्वाधिक लोकप्रियता पा सकी। यह परीक्षा लेकर राम ने अपना नाम ही उज्ज्वल नहीं किया अपितु अपने को सत का पर्याय ही बना दिया इसीलिए मृतक का शव श्मशान में ले जाते समय 'राम नाम सत है' का उच्चारण करते हुए शवयात्री जीवन की सार्थकता का बोध कराते हैं। लोक में क्या पुरूष और क्या महिला ; दोनों के परीक्षण प्रचलित हैं।

राजस्थान में विभिन्न जातियों में सत की परीक्षा के विभिन्न रूप प्रचलित रहे हैं। उनमें से कुछ का दिग्दर्शन यहां द्रष्टव्य है।

पड़ की साक्षी में सत-परीक्षण :

राजस्थानी लोक-चित्रांकन का एक प्रमुख प्रकार है पड़ चित्रांकन। इस चित्रांकन में मुख्यत: कपड़े पर लोकदेवता पाबूजी और देवनारायण की जीवनलीला चित्रित की हुई मिलती है। इन पड़ों के भोपे गांव-गांव इन्हें फैलाकर रात्रि को विशिष्ट गाथा-गायकी में पड़वाचन करते हैं। इससे पड़भक्त जहां अपनी मनौती पूरी हुई समझते हैं वहीं भावी अनिष्ट से भी अपने को बचा हुआ मान बैठते हैं।

इन्हीं पड़ों में एक पड़ माताजी की होती है। इस पड़ का किसी प्रकार कोई वाचन नहीं किया जाता। बावरी लोग इसके पुजारी होते हैं और अपनी जाति में इसी पड़ की साक्षी में स्त्री के सत की परीक्षा लेते हैं। तब माताजी की पड़ सबके सम्मुख फैला दी जाती है और माताजी का धूप ध्यान करने के पश्चात पंचायत के सम्मुख उस स्त्री को उफनती हुई तेल की कढ़ाई में हाथ डालने को कहा जाता है। सबके सामने, माताजी की साक्षी में वह स्त्री तेल की कढ़ाई में अपने हाथ डालती है। यदि उसके हाथों पर उकलते तेल का किसी प्रकार का कोई असर नहीं होता है तो वह शीलवान तथा सद्चलनी समझ ली जाती है।

बावरी लोग माताजी की इस पड़ का एक उपयोग और करते हैं और वह है चोरी करने के लिए जाने हेतु शुभ-अशुभ शकुन लेना। कहते हैं कि पड़ जब अच्छे शकुन दे देती है तो ये लोग चोरी हेतु निकल पड़ते हैं और जब सफलतापूर्वक घर लौट आते हैं तो पूजा में माताजी की पड़ का धूपध्यान करते हैं। नवरात्रा में तो नौ ही दिन पड़ को धूपदीप किया जाता है।

पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी ने बताया कि चूंकि माताजी की पड़ का उपयोग अधिक नहीं होता है इसलिए ये पड़ें इक्की-दुक्की ही बनवाई जाती हैं परन्तु बावरी लोग बड़ी श्रद्धा और भक्ति से इस पड़ को बनवाकर बड़े यत्नपूर्वक अपने घरों में रखते हैं। उनकी तो यह पड़ की एकमात्र देवी, माताजी और रक्षिका है। अपना प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य-संस्कार ये लोग इसी पड़-देवी की छत्रछाया में सम्पन्न करते हैं।

सत की परीक्षा के हमारे यहाँ और भी कई विधि-विधान बने हुए हैं। सत्य-असत्य की घटनाएँ हमारे जीवन में पग-पग पर मिलती हैं। परिवार और पास-पड़ोस में भी रात-दिन ऐसे घटना-प्रसंग होते रहते हैं। कोर्ट-कचहरी, पंचायत आदि में भी सच-झूठ का पता लगाने के लिए विविध तौर-तरीके प्रचलित हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में ऐसे कई रूपों का उल्लेख है जिनसे सच का पता लगाया जाता था। मनुस्मृति तथा अन्य शास्त्रों में भी ये उल्लेख मिलते हैं।

सांसियों में सत-परीक्षण :

जोशीजी ने एक और किस्सा सुनाते हुए कहा कि सांसी जाति में एक नवोढ़े को सुहागरात के दिन ही अपनी नई नवेली के चरित्र पर सन्देह हो आया तब उसने सुहागरात मनाना छोड़ दिया और आसपास के गांवों के पंचों की साक्षी में सौलह वर्षीय दुल्हन लीलीबाई की अग्नि-परीक्षा ली गई। सूर्योदय के समय लीली ने तब अग्नि-परीक्षा दी। पहले उसे नहलाकर निर्वस्त्र कर दिया। केवल एक छोटा सा धुला हुआ सफेद लट्ठा ओढ़ने को दिया। फिर उसके दोनों हाथों पर पीपल के पत्ते रखकर कच्चे सूत से उन्हें बांध दिया।

मुहूर्त के अनुसार तब पंचों द्वारा कोई ढाई किलो वजन का लाल गर्म लोहे का गोला उसके हाथ में रख दिया गया और कहा गया कि सात कदम चलकर पास पड़े सरकंडों पर वह गोला रख आये। लीली ने ऐसा ही किया। वह बेदाग

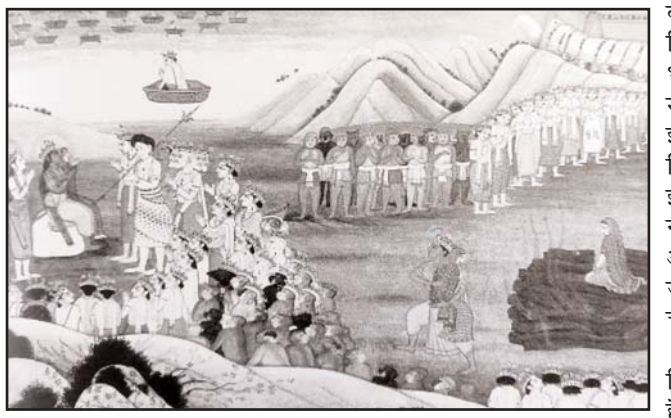

बच गई और चरित्रवान सिद्ध हो गई तब दूल्हे राजा को बतौर जुर्माना ढाईसौ रूपया देकर अपनी नवविवाहिता से माफी मांगनी पड़ी। 1

दशामाता कथा में सत-परीक्षण :

होली के दूसरे दिन से दशामाता का व्रत-अनुष्ठान प्रारम्भ हो जाता है। दस दिन तक लगातार महिलाएँ व्रत कर दशामाता की कथाएँ सुनती हैं। प्रतिदिन पांच कथाएँ सुनकर महिलाएँ व्रत खोलती हैं। ऐसी कई कहानियां हैं जो सत असत, मंगल-अमंगल, अच्छा-बुरा, करणीय-अकरणीय के पक्षों को प्रस्तुत कर जीवन में सच पक्ष का सकारात्मक बोध कराती हुई, पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों-नातों में सुख, सौहार्द तथा सामंजस्य की स्थापना करती हैं।

इन कहानियों में देवी-देवता विभिन्न मानवीय रूप धारण कर गृहस्थों की परीक्षा लेते हैं। सूरजनारायण अपनी पत्नी रानादे को कभी मोची का रूप धारण कर तो कभी कोढ़ी का रूप धर परीक्षा लेते हैं। एक कहानी में तो सूरज की साक्षी में ही सत की परीक्षा ली जाती है। कहानी के अनुसार रानी के कुंवर को एक बणजारण अपना कुंवर बना लेती है। यह सिद्ध करने के लिए कि वस्तुत: कुंवर किसका है बनजारण का या रानी का; इसके लिए रानी और बनजारिन दोनों को सूर्यदेव के समक्ष खड़ी कर दी जाती है। दोनों हाथ-जोड़ नमन करती हुई सूर्य भगवान से प्रार्थना करती हैं- 'हमारा न्याय आप के हाथ में है। आप जो भी न्याय करेंगे, हमें स्वीकार्य होगा। कुंवर जिसका हो उस नारी की कंचुकी की कसने टूट जायें और स्तन से दूध की धार छूट सीधी कुँवर के मुँह में जा पड़े।'

दोनों की इस कठोर परीक्षा में, देखते-देखते रानी की कसनें टूटती हैं और उसके स्तन से दूध की धार फूट सीधी कुंवर के मुँह में जाकर उसे दुग्ध-पान कराती है। बनजारिन मुँह देखती रह जाती है। 2

अब वह समय नहीं रहा। हमारे जीवन जीने और विकास करने के सोच तथा तौरतरीकों में भी बड़ा बदलाव आया है तब भी कई सारी परम्पराएँ जस की तस बनी हुई हैं। कई लोग उन्हें दकियानुसी और अंधविश्वासों की संज्ञा देते हैं लेकिन सामाजिक मान्यताओं के कारण उनका प्रभाव बना रहता है और मोतबीर लोग मिलकर उन्हें जीवंत बनाये रखते हैं।

जनजाति समाज में सत-परीक्षण :

जनजाति समाज भी इनसे अछूता नहीं कहा जा सकता। सच को उगलवाने के लिए चित्तौड़गढ के कुंभानगर में रह रहे रायचन्द के रात्रि को तीन सौ रूपये चोरी चले गये। उस समय रायचन्द के साथ उसके पांच अन्य और साथी थे। ये छहों प्रतापगढ़ जिले के सालमगढ़ निवासी मीणा जाति के थे। रायचन्द असमंजस की स्थिति लिये था। वह किसका नाम ले, किसको चोर साबित करे, उसके पास कोई प्रमाण तो था नहीं।

अंत में उसने सत का पता लगाने का उपाय खोज निकाला जो उसकी जाति में परम्परा से चला आ रहा था। वह तेल लाया और उसे खूब गर्म किया। खौलते तेल में उसने एक रूपये का सिक्का डाला और अपने साथियों को हाथ से वह सिक्का निकालने को कहा। इसके लिए रायचन्द स्वयं सबसे आगे रहा। सबसे पहले उसने हाथ डाला। उसके बाद क्रमश: उसके अन्य पांच साथियों - देवीलाल, मोहन, दला, बगसी तथा वारा ने अपना हाथ डाला किन्तु शर्त के अनुसार कोई भी पाकसाफ सिद्ध नहीं हो सका। सबके हाथ बुरी तरह झुलस गये। स्वयं रायचन्द भी निर्दोष सिद्ध नहीं हो सका। इस परीक्षा से कोई निष्कर्ष नहीं निकला और वे स्वयं भी आश्चर्यचकित रह गये कि जब किसी ने रूपये नहीं चुराये तो गये कहाँ। 3

सच की परीक्षा के लिए विशिष्ट आयोजन होते आये हैं। इसके लिए विभिन्न समाजों में अपनी-अपनी विशिष्ट परम्पराएँ रही हैं। किसी धर्मस्थल में, देवी-देवता की शरण में जाकर समाज विशेष का जुड़ाव होता है जहां समाज के प्रमुख, अगुवा लोग मिलकर विधिवत उसका निर्वाह करते हैं। ऐसा भी देखा गया जहां सामूहिक रूप में सत की परीक्षा के लिए विशिष्ट दिवस का चयन हुआ रहता है। इस परीक्षा के दौरान समूह-प्रसादी अथवा गोठ का आयोजन भी बड़ा ही महत्त्व लिए होता है।

आधुनिक युग में सत परीक्षा की प्रासंगिकता के एक सवाल में एक बुजुर्ग ने बताया कि नारी ही सृष्टि की शक्ति स्वरूपा मुख्य धराणी है। उसकी शुद्धि से किसी भी वंश की शुद्धता बरकरार रहती है। वंश जब बिगड़ता है तब सृष्टि की पारदर्शिता धूमिल एवं मलिन होने लगती है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है।

सीता का सत परीक्षण :

सीता भारतीय समाज एवं संस्कृति की आदर्श रही और उसी आदर्श के चलते नारी के सतीत्व की परीक्षा का सिलसिला गतिवान बना।

राम के चौदह वर्ष वनवास भोगने का समय भी कई दृष्टियों से उल्लेखनीय हुआ और चौदह का अंक विशिष्ट अर्थ का द्योतक बना इसीलिए आज भी समूहबद्ध सत परीक्षा में चौदह नारियों का एक साथ सम्मिलित होना देखा जाता है। राजस्थान के बड़ीसादड़ी कस्बे के हिंगलाज माता मंदिर में वागरिया समाज की चौदह महिलाओं ने सत परीक्षा दी। इन महिलाओं से गर्म तेल में हाथ डालकर पूड़ियाँ निकालने को कहा गया।

समाज के मुखिया गंगाराम के अनुसार उनके समाज में यह परम्परा राजराणा रायसिंह के जमाने से चली आ रही है। जिन पात्रों में महिलाओं ने रात्रि को परीक्षा दी उनमें सुबह देशी घी का हलवा व गुड़ की लापसी का भोज किया गया। 4 उल्लेखनीय है कि राजराणा रायसिंह प्रथम का समय सन् 1622 से 1656 तथा द्वितीय का समय सन् 1743 से 1761 तक का रहा।

सगतीबाण नामक एक हरजस में जब लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने से वे मूर्छित हो जाते हैं तब चारोंओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। ढूंढ़ पड़ती है कि कौन ऐसा माई का लाल है जो धरती पर निढ़ाल पड़े लक्ष्मण की मूर्छा दूर करे। राम घोषणा करते हैं कि मूर्छा भगाने वाले को आधा राज्य और सवाई धरती का मालिक बना दिया जाएगा। तब चहुंओर से आवाज गूंजती है कि धरती पर दो ही लाल हैं जो मूर्छा दूर कर सकने का सामर्थ्य रखते हैं। उनमें से एक माता सीता है जो स्वयं सतवंती है और दूसरे हनुमान यति हैं। हरजस में कहा गया है कि माता सीता तो अपने सत के प्रभाव से और हनुमान बूंटी से लक्ष्मण की रक्षा कर सकते हैं। हरजस है-

लिछमण रे लागो रे बाण
सगती रे पड़्यो धरती।। टेर।।
है कोई अस्यो म्हारा भाई ने जिवावे
आधो राज दूं ने सवाई धरती।। लिछमण....
कै तो जिवावे माता सीता सतवंती
कै कोई जिवावे हड़ुमान जती।।
काम सूं जिवाड़े माता सीता सतवंती
काम सूं जिवाड़े हड़ुमान जती
सत सूं जिवाड़े माता सीता सतवंती
बूंटी सूं जिवाड़े हड़ुमान जती।।

लोकगीतों में सत परीक्षण :

राजस्थान के कांगसिया नामक लोकगीत में भी कांगसिया चुराकर ले जाने वाली पणिहारिनों के लिए हथेली पर गर्म गोले रखकर चोरी का पता लगाने का उल्लेख मिलता है। गीत की पंक्तियाँ हैं -

म्हारे छैल भंवर रो कांगसियो
पणिहार्यां ले गई रे।
धमण धमाई लूं, गोला तपाई लूं
तातो तेल तलाई लूं रे
अणी कांगसिया रे कारणिये म्हूं
मंदर धीज धराइलूं रे।
पणिहार्यां ले गई रे।
पांच गाम रा पंच बुलाई लूं
चौड़े न्याव कराई लूं रे
पणिहार्यां ले गई रे।

अर्थात् लोहार की धौंकनी की तेज आंच से भट्टी पर उबलते-खौलते तेल में लोहे के गोले गर्म कर मंदिर पर पनिहारियों के हाथों में रख पता लगवाऊं कि प्रियतम का कंघा कौनसी परिहारिन चुराकर ले गई? इसके लिए पांच गांवों के पंचों को बुलाकर सबके सम्मुख खुली पंचायत में न्याय कराऊं। 5

शास्त्र में तथा लोक के कहानी-किस्सों एवं किंवदंतियों में सत की परीक्षा की मुख्य धुरी महिला रही है। इसका एक कारण तो यह है कि महिलाओं की परख उनके चरित्र से की जाती है जबकि पुरूष का भाग्य ही प्रबल रहता है। कोई भी प्रामाणिक ढंग से न स्त्री के चरित्र के संबंध में कुछ कह सका है और न पुरूष के भाग्य को ही कोई व्यक्त कर सका है इसीलिए कहा गया- 'त्रिया चरित्रं पुरूषस्य भाग्यं देवो न जानेति।'

फिर नारी की संरचना जिस ढंग से हुई है वह भी उसके शील-सौंदर्य को अधिक उद्घाटित करने वाली है। परमात्मा ने भी उसे माहवारी देकर हर माह ही शरीर शुद्धि का उपहार दिया है। जिस उम्र में माहवारी रूक जाती है उस उम्र पर कोई अंगुली नहीं उठाता।

कालबेलियों में सत परीक्षण :

कालबेलिया समाज भी इससे अछूता नहीं है। एक विवाहिता ने किसी गैर व्यक्ति के साथ किये गये अपने अवैध संबंध का कारण अपनी माँ पर थोप दिया। पंचायत ने उसे दोषी मानते हुए बिना हत्थे के दो हथौड़े आग में गर्म करवाये। वे जब सुर्ख लाल हो गये तो विवाहिता को दोनों धधकते हथौड़े अपने हाथों में लेने को कहा। वह उन्हें लेने को तैयार भी हो गई। इतने में उसकी माँ उठी और अपनी बेटी को निर्दोष बताकर उसका सारा दोष अपना होना स्वीकार किया। यह सुन पंच अवाक् रह गये।

पंचों का सारा ध्यान विवाहिता की बजाय उसकी माँ पर केन्द्रित हो गया। उन्होंने उस विवाहिता को निर्दोष ठहराते हुए उसकी माँ को दोषी माना और किसी अगली बैठक में उसे परीक्षा के लिए हाजिर होने का हुकमनामा दे दिया। 6

यही नहीं, युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पूर्व रणबाज अपनी परिणिता की योनि को अनुभवी सुनारण से स्वर्ण नथ द्वारा नथवाने की रस्म करते। युद्ध से लौटकर उस नथ को खुलवाने की रस्म की जाती। इस वक्त बड़ा भोज दिया जाता। वह नथ थाल में सजाकर रखी जाती। रानी, ठुकरानी, राजकुमारी को मुंहमांगी बख्शीश दी जाती। पहला भोग ही उस नथ को दिया जाता। 7

नट जाति में सत-परीक्षण :

सत की परीक्षा का रिवाज खानाबदोस किंवा घुम्मकड़ जातियों में अधिक देखने को मिलता है। इन जातियों में पुरूष और महिलाएँ दोनों व्यवसायरत रहते हैं तब स्वाभाविक है, महिलाओं का पाला पर पुरूष समाज से भी पड़ता है। वे उस समाज के सम्पर्क एवं संसर्ग में आती हैं तब कई तरह की भ्रांतियां भी उनके साथ जुड़ जाती हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 अक्टूबर 2023

सम्पादकीय

भारत छोड़ो से भारत जोड़ो तक

विश्व-देशों में हमारा देश सबसे अनूठा और अलौकिक है। यह ठीक ही कहा गया- 'सारे जहां से अच्छा हिन्दुसतां हमारा, हमारा, हमारा।' इस पंक्ति में 'हमारा' शब्द तीन बार उच्चरित हुआ है। इसी में हमारी स्वतंत्रता का बोध परिलक्षित है।

यह देश लोकवाची, समूहवाची देश है। यहां का हर व्यक्ति एक परिवार है। कुटुम्ब है। यहां की महिला और पुरुष नितांत अकेला और एक नहीं, पचासों सम्बोधनों का सुरंगा दायित्व लिए सुखी तथा समृद्ध है। पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनस्पति तथा त्रस काय वाले थल जल एवं नभ में विचरण करते सभी 84 लाख जीवों के साथ हमारी मैत्री है। जाने-अनजाने में मन-वचन-काया से उनके प्रति कोई दुराभाव भी हो गया होता है तो उनसे क्षमा याचना कर यहां का प्राणी अपने को पुण्यजीवी मानकर प्रसन्न होता है। पूरी दुनिया को अपना कुटुम्ब 'वसुधैव कुटुम्बकम्' मानने वाला देश हमारा और हमारा ही है और यही हमारी स्वतंत्रता, स्वाधीनता एवं मनचीती मनस्विता है ।

इसी देश के चेतन-अवचेतन में धर्म तथा अध्यात्म की पुरातनता लिए 'निज पर शासन फिर अनुशासन' की अधुनातनता का खण्ड-खण्ड अखण्ड प्रकाश दीप्त-प्रदीप्त है। पढ़ाई के दौरान छोटी कक्षाओं में ही 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे' के जोश ने हमारी भुजाओं में बल और भाल पर तेजस्विता भर दी थी। स्वतंत्र होने पर चौथी से सीधे छठी कक्षा में पहुंचकर जो गर्वानुभूति मुझे हुई वह मन-मयूरी बन गई ? थी। फिर प्रभातफेरियों में 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा' तथा 'प्राण मित्रों भले ही गंवाना, पर न यह झंडा नीचे झुकाना' का गौरव गान हमारी फड़कन को उड़नपंखी बनाता रहा। स्कूल में शनिवार को साप्ताहिक सभा एक छात्रा भारतमाता बन जाती। दूसरे छात्र आजादी के तरानों वाली विविध काव्य-गीतिकाओं की जोश भरे शब्दों हुंकार करते। यथा-

यश वैभव की चाह नहीं / परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि अच्छा है तो यह है / जग में स्वेच्छाचार दमन न रहे ।।

ऐसे ही कुछ प्रयोग हमने भारतीय लोककला मंडल में किये थे। अपने कलाकारों द्वारा राजस्थानी ख्याल की तर्ज पर मेरे द्वारा रचित इस नृत्यनाटिका ने सैकड़ों प्रदर्शन दिये। तीन दृश्यों की यह नाटिका 'आजादी रो उजास' नाम से लिखी गई। पहले दृश्य में भारतमाता जेल में बंदी है। दो पंच अंग्रेजों को भगाने की जुगत सोचते हैं। दूसरे दृश्य में भारतमाता तथा अंग्रेजों की बातचीत, गांधीजी द्वारा आजादी प्राप्त करना तथा तीसरे दृश्य में पंचायती राज का महत्व दिखाया गया है।

इसी तरह पड़-शैली में चित्रात्मक 'नृत्यपड़ी' की रचना की। इसके लिए मोटे कागज पर कलेण्डरनुमा चित्र बनाये गये जिन्हें एक लकड़ी के सहारे संयोजित किया गया। कलाकार और उसका सहयोगी जमुरा नृत्यमय ठुमका भरते एक-एक चित्र दिखाते अनुरंजनपरक गायकी प्रस्तुत करता है जिसमें आजादी के नव उल्लास की कथा है। टेर है- 'अरे ओ गांवां रा रेवाळ, आवो थांने कथा सुणावां, सुणो लगाकर कान'.....।

हमारे पुस्तकीय पाठों में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की-

'जय-जय भारतमाता
तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।'

और माखनलाल चतुर्वेदी की 'एक फूल की चाह'-

'मुझे तोड़ लेना वनमाली / उस पथ पर देना तुम फैंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने / जिस पथ जावें वीर अनेक।।'

कविता ने स्वतंत्रता का माहात्म्य हमारे अन्तस में गहरा जड़ दिया था। बड़े होने पर हमारी समझ और सोच की आंख-पांख ने विस्तार पकड़ा। महात्मा गांधी की एकनिष्ठ स्वातंत्र्योत्तर चेतना को प्रेरित करते फिल्मी गीत-

'दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।'

का स्वर लेकर करोड़ों भारतीय 'चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर' ले हमसफर हो गए। लाल किले पर पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा तिरंगे को सलामी देते 'जय हिन्द' और राष्ट्रगान 'जण गण मण' से अपने गांव के कण-कण में आजादी का यशस्वी पौरूष अंकुरित होते देखा। नाथूराम गोडसे द्वारा गांधीजी की हत्या होने पर पूरा गांव शोकमग्न हो गया। भाई साहब ने अपना नाथूलाल नाम बदलकर नरेन्द्र कर दिया। उनके कहने पर मेरा नाम भी मिठूलाल से महेन्द्र हो गया। गांववालों की जबान पर यह नाम दुरूह होकर नाथू-मिठू ही चलते रहे। यही नहीं बड़ी बहिन जीजां (93) तो नाथू-मिठू ही कहती थी।

कवि-मंचों पर-

'स्वतंत्रता का मतलब नहीं कि बेकारी कंगाली बढ़े।
स्वतंत्रता का मतलब नहीं कि भूखमरी बर्बादी बढ़े।।'

की दहाड़ देश के मिजाज का दर्पण दिखाती रही। इस बीच कविवर रामधारीसिंह 'दिनकर' की हुंकार देती 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' ललकार में जयप्रकाश नारायण के ओजस्वी आंदोलन पर देश को समग्र परिवर्तन की अंगड़ाई लेते देखा। वह दौर आजादी के पूर्व का था जब नारा था- 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और आज आजादी के सित्तर वर्ष बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लालकिले की प्राचीर से कहा- 'हम सबको मिलकर भारत छोड़ो की जगह भारत जोड़ो का स्वर बुलंद करना होगा।'

आजादी के बाद कई आंधियां व्याधियां आईं मगर स्वतंत्रता का भारत तंत्र अपनी निरन्तरता में लोकतंत्र का सबल संबल बना 'सारे जहां से अच्छा' बनने की दिशा में लाट ललाट ही बना हुआ है।

सूचना

डॉ. भानावत परिवार का नया निवास 352, श्रीकृष्णपुरा की बजाय फ्लैट नं. 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, मुनि सुव्रतस्वामी जैन मंदिर परिसर, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर है।

चंवर डुले बल खाय बिजणी

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

चामर या चंवर कभी राजदरबार की शोभा थे। चमरी नामक हिमाचली गाय जैसे पशु की पूंछ के केश से बनाए जाने से यह चामर कहलाया या इसके नाम से वह पशु चमरी हुआ, मालूम नहीं लेकिन, वराहमिहिर को यह पुरानी कहानी अच्छी लगी कि देवताओं को हवा के लिए ब्रह्मा ने चमरी की रचना की।

उन्होंने कहा कि तुम्हारी पूंछ के केश से चामर बनेंगे। पूंछ सफेद, काले और भूरे केश उगाएगी...। तब से ही चमरी की पूछ-परख हो गई और पूंछलोच होने लगा। एक-एक केश के उतारने और गिरने पर सम्भालने पर जोर दिया जाने लगा। हजार से लेकर तीन हजार तक की संख्या में केश चामर के स्वरूप व मूल्य के आधार बने और सफेद बालों की चमक-दमक ने बड़ा आकर्षित किया क्योंकि यह रंग विप्र वर्णोचित माना गया।

यूं इसे मंगल प्रतीकों में गिना गया है। जिस तरह परस्पर गुणक रूप वाली दो तलवारें वीरता की प्रतीक मानी गई, वैसे ही क्रॉस रूप में दो चामर मंगल और शकुन समझे गए। चामर का सपने में आना भी ऐसा ही फलदायक बताया गया, वजह शायद यही रही हो कि यह आम आदमी की पहुंच से बाहर था सो, हाथ न आवे, सपने आवे। उसी में सबूरी।

सोमेश्वर ने इसे उपभोग की वस्तु माना और बहुत युक्ति से चामर प्रशंसा लिखी। लगता है कि पांचवीं से दसवीं सदी तक चामर बहुत लोकप्रिय रहा और दरबार की शोभा मान लिया गया। तब तक इसके तीन उपयोग भी तय हो गए -

1. शोभा व सौंदर्य के लिए।
2. हवा के प्रयोजन हेतु।
3. पसीना सुखाने के लिए।

उस काल तक स्त्रियों को दरबार की परमशोभा का आदर देकर उनके हाथों चमरियों के डंड झुलाए जाते और इस बीच वे मुस्कुरा भी देती तो दांतों की पंक्तियों की चंद्रिका मानों अमृत वर्षा कर महाराज का अभिषेक कर देती। कितना सुन्दर व मुग्ध करने वाला वर्णन किया गया है।

चमरी के बाद या पहले मोर की पूंछ भी आकर्षक लगी तो उसके भी चंवर बने लेकिन उनको कहा गया - मयूर व्यजन। सहस्राक्ष व्यजन यानी हजार आंखों वाला वीजणा। तालपत्र के व्यजन की महिमा तो देवालय में दान के लिए खूब लिखी है। ये दान आज दिन तक है। मयूरपिछी या मयूर व्यजन मुनियों की पहचान बना। मुनियों ने तो उसको धारण करने और छोड़ने के लिए उचित विधि ही अंगीकार की है।

आजकल लघु चंवर भी बनाए जाने लगे हैं लेकिन उनमें कलाकारी नहीं दिखाई देती। चामर की रचना विशिष्ट रूप में होती रही है। पटवा कलाकार इनको अच्छे से बना लेते हैं। मरम्मत भी करते हैं। डंड सोनी परिवारों ने बहुत कलात्मक बनाए हैं।

नासिक के पास जैनियों का गजपंथ नाम का तीर्थक्षेत्र है। वहाँ की गुफा 'चामर लेणी' कहलाती है क्योंकी वहाँ सबसे ज्यादा चामरधारी प्रतिमाएं हैं।

पिछीधारी के रूप में आज भी संघ में संख्या गिनी जाती है।

उदयपुर के महलों में बने बारात के एक चित्र में चामर, छत्र मेघाडंबर, पताका आदि का प्रयोग है। राजा की सवारी, रायरेवाड़ी जिसे राजपाटिका भी कहा गया है, में चामर, छत्र, ध्वज, पताका के साथ सैनिकों के रहने की परम्परा तो बहुत पुरानी है। जैसा कि श्लोक आता है -

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति सीम्नि पुष्कलको हतः।।

याक ही चमरी प्राणी है। महाभाष्य, काशिकावृत्ति, हितोपदेश, शृङ्गार प्रकाश, सिद्धान्तकौमुदी आदि में भी इसके संदर्भ है। सूँथ (संतरामपुर) रियासत की ताम्र मुद्रा पर चंवर - चामर अंकित है। बड़ौदा के भरत सोनी के संग्रह में इस प्रकार की आठ मुद्राएँ हैं।

'छत्रं चामरयो युग व्जनकं चादर्शकं निर्मलं' के अनुसार एक नहीं , दो चामर भगवान को डुलाये जाते हैं।

गुरुद्वारे में भी गुरुग्रंथ साहब को चंवर डुलाया जाता है जिसे चंवर साहब कहा जाता है। बस्तर में चंवर और मयूर व्यजन दोनों का प्रचलन है। मयूर व्यजन का उपयोग सर्वाधिक है। सभी मेले, मड़ई में सिरहा इनको धारण किए नृत्य करते हैं। चंवर धारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी माईजी के डोली और छत्र के साथ रहते हैं। चंवर का उपयोग सिर्फ यहां माईजी के लिए ही सीमित है। सोमेश्वर देव का चामर वर्णन बहुत बढ़िया है।

छत्र-चामर-मोरचेल-अब्दागिरी-सूर्यपान-मत्स्यदंड-तुलादंड... मोरपंख के गुण हमें महाभारत के रचना काल से ज्ञात हैं। हंसपंख के गुण, तीतरपंख के गुण। ये बहुत रोचक और अलग पक्ष हैं। झाड़ा अपने आप में एक चिकित्सा विधान है और जनजातीय प्रथाओं में उसका उत्स है।

अपना देश अपनी संस्कृति

राजा वासक का वैभव स्थल

मेवाड़ में कभी राजा वासक का वैभव-पराक्रम दूर-दूर तक अपना प्रभाव लिये था। आदिवासी भीलों के गवरी नृत्यानुष्ठान में भारत-गाथा में वर्णित राजा वासक का पायदान तो ठेठ पाताल तक था। वहां उसकी बाड़ी में अनेक तरह के पेड़-पौधे तथा फुलवाड़ी की महक अन्य लोकों तक महकती थी। मृत्युलोक में पहला वटवृक्ष वहीं से लाया गया था। उसके साथ पीपल, बड़, केला, नीम जैसे वृक्ष और फूलजनित सुगंधित पौधे आये।

कहा जाता है कि धरती पर राजा वासक का स्थान विशनगर नाम से प्रसिद्धि लिये था। यह नगर रियासतकालीन मेवाड़ के सौलह प्रमुख ठिकानों में से एक कानोड़ से सत्रह किलोमीटर दूर उत्तर में था जो वर्तमान में बलीचा नाम से जाना जाता है। यहां उस काल के अवशेष उसकी विशालता और वैभव का बखान करते देखे जा सकते हैं। महाभारत तथा पुराणों में इस नगर का नागराज वासक की राजधानी के रूप में वर्णन मिलता है।

यहां के लोगों की मान्यता है कि तब शहर में 350 मन्दिर थे जो अपार धन-सम्पदा लिये थे। मुगल बादशाह ने यहां के मन्दिरों को भी तहसनहस करने में कोई कसर नहीं रखी। यह तो ठीक रहा कि लोगों ने देव-मूर्तियों को रामकुण्ड में छिपा दिया। यहीं बांबी पर एक छोटा सा मन्दिर बना हुआ है। प्रसिद्धि है कि राजा वासक नाग के रूप में यहां विचरण करते हैं।

जनश्रुति के अनुसार यहां राजा वासक उज्जैन से आकर बसे। एक डांगी पटेल ने वासक के लिए अपनी जमीन दान कर दी। यहीं राजा ने अफीम, गन्ना, पान, तिल्ली की खेती प्रारम्भ की और एक चौपाया भैंस उपजाई। इस कारण आज भी यहां का दूध-घी-मावा बाहर उदयपुर-प्रतापगढ़ तक सप्लाई होता है। मैंने इस स्थल का 18-19 सितम्बर 2020 को अध्ययन किया।

पत्रकार कमलाशंकर श्रीमाली ने बताया कि राजा वासक मध्यप्रदेश के हापलिया, हगवाड़िया, पीपली, मल्हारगढ़ होते निम्बाहेड़ा के पास वाड़ी, कचुमरा होते बलीचा और वहां से जयसमंद के पास वारपुरा के सुप्रसिद्ध गातोड़जी पहुंचकर अपना स्थान बनाया। यहां उनका प्रसिद्ध मन्दिर है जहां बांबी है। यह बांबी ठेठ उज्जैन के महाकालेश्वर तक की पहुंच लिए है।

गातोड़ में वासक रविवार को एक भोपे के शरीर में दर्शन देते हैं। चोरी करने वाले संदिग्ध व्यक्ति को बांबी में हाथ डालने को कहा जाता है। इससे सत-असत का पता चलता है। चोरी किये व्यक्ति का हाथ बांबी में नाग द्वारा डसा जाकर लहुलूहान कर दिया जाता है।

गातोड़जी की प्रसिद्धि इसलिए अधिक महत्त्वपूर्ण है कि मोलेला गांव के कुम्हारों द्वारा विविध देवी-देवताओं की माटी की जो प्रतिमा विशेष संस्कारों के साथ बनाई जाती है और यहां से जहां-जहां भी गांवों में इनकी प्रतिष्ठा की जाती है वे मोलेला से विशिष्ट अनुष्ठान द्वारा ले जाई जाकर सर्वप्रथम गातोड़जी ले जाती हैं। यहां से देवता द्वारा मान्य होकर ही सम्बन्धित देवरों में उनकी विधिवत स्थापना की जाती है। मोलेला और गातोड़जी का लेखक ने विधिवत अध्ययन कर विस्तृत जानकारी एकत्र की और अनेकबार लेखन किया।

बलीचा में वासक की पूजा का जिम्मा सम्भाले नन्दराम वैष्णव ने बताया कि प्रतिवर्ष नागपंचमी को यहां बड़ी तादाद में मेलार्थी जुड़ते हैं। पहाड़ियों से घिरी राजा वासक की बाड़ी सदैव हरीभरी रहती है।

सुना गया कि एकबार कानोड़ के ठिकानेदार को वासक ने सपना दिया कि उनके बलीचा स्थित खण्डहर में अकूत सम्पत्ति का खजाना है सो एक ही रात में, बिना किसी को भनक दिये, कानोड़ के राजमहल में लाया गया। सपने के अनुसार रातभर एक हथिनी इस सम्पदा को ढोती रही किन्तु सुबह होते-होते वह थककर इतनी चूर-चूर हो गई कि उसका प्राणान्त हो गया। बलीचा में ही नहीं, कानोड़ के जन-जन में भी यह बात फैली हुई है। कानोड़ मेरी जन्मभूमि है।

इतनी सम्पत्ति पाकर रावले के ठिकानेदार रावजी ने महल के पास का स्थल बालिका शिक्षा निमित्त अग्रसेन कुंवर के नाम विद्यालय के रूप में भेंट कर दिया जहां वर्तमान में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय संचालित है।

- म. भा.

कावड़ प्रसंग -

धन्ना जाट री खेती बोवे तूम्बा निपजे मोती

- डॉ. तुक्तक भानावत -

'धन्ना जाट री खेती बोवे तूम्बा निपजे मोती।' यह जुमला चित्रात्मक कथा काष्ठ फलक कावड़ का है। दस-आठ कपाट वाली कावड़ पर छोटे-छोटे ऐसे अनेक चितराम कोरे होते हैं। इनमें विशिष्ट देवी-देवता, विशिष्ट भगत, विशिष्ट दानदाता और लोकजीवन में पूज्य प्रचलित आदर्श चरित रामायण महाभारत के शिरोमणि पात्र तथा विभिन्न कालों के ऋषि, मुनि, संत, महात्मा होते हैं।

कावड़ चितेरे पारम्परिक घराने के होते हैं जो कावड़ तैयार कर अपना बंधाबंधाया नेग लेकर कावड़िया भाट को कावड़ देते हैं जो गांव-गांव, घर-घर फेरी देता उन चित्रों की गुंडी खोलकर ग्रामीणजनों को घर बैठे तीर्थाटन का पुण्यार्जन कराता है।

ग्रामीणजन बड़ी श्रद्धा और आस्थापूर्वक कावड़िया भाट को मनमाफिक श्रद्धा चढ़ावा देकर सम्मानपूर्वक विदा करने का आत्मसुख प्राप्त करते हैं। कावड़िया भाट को अपने जिम्मे आये कई गांवों और घरों में फेरी लगानी पड़ती है और कावड़ में चित्रों का पिटारा भी इतना होता है कि हर चित्र की विस्तृत व्याख्या नहीं हो सकती। हर कथा की विस्तृत जानकारी भी किसी को नहीं होती। केवल सूत्र रूप में जो अति प्रसिद्धि लिए होता है वही लोकजीवन में प्रचलित सत्य तथ्य होता है।

धन्ना जाट की प्रसिद्धि भगत के रूप में सर्वत्र है। वह ऐसा भक्त था जिस पर भगवान की असीम कृपा हुई तो उसने अपने खेत में तूम्बे के बीज बोये और मोतियों के फल लगे। ऐसा ही जोरदार भगत कुबा कुम्हार हुआ जिसने मिट्टी के हांडे घड़े बीस किन्तु वे उससे भी डेढ़ी की संख्या लिए तीस हांडे सोने में परिवर्तित हो गये। ऐसे ही सेन भगत हुआ नाई जिसने हजामत भगवान की बनाई।

यहां धन्ना जाट के बारे में कुछ जानकारी प्रस्तुत की जा रही है। जाट परिवार से सम्बद्ध धन्ना का परिवार अत्यन्त गरीबी लिए जिया। माता-पिता बचपन में ही धन्ना को छोड़ चले थे। उसके बाद विरासत में मात्र एक छोटा-सा खेत बचा था। दुर्दिन जब आता है तो सब ओर से मुसीबत का पहाड़ खड़ा हुआ लगा है।

राजस्थान वैसे ही अकाल सम्मत प्रान्त रहा। धन्ना के पास खाने को कुछ नहीं बचा। न बैलों को खिलाने के लिए घासफूस ही। बड़ी मुश्किल में एक बैल बच रहा। अकाल के दुर्दिन बड़े असह्य

रहे। कोई सहायता कहीं से नहीं रहने के कारण धन्ना की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई।

उन्हीं दिनों गांव में भागवत कथा का आयोजन हुआ। सात दिन कथा का बड़ा ठाठ रहा।

पंडितजी ने अपनी कथा की शैली से गांव वालों को मुग्ध कर दिया। धन्ना के पास पंडितजी को देने के लिए कुछ नहीं था। उस गांव में प्रत्येक गांववासी ने कथावाचकजी को मनचाही भेंट दी। धन्ना मारे संकोच के दबा जा रहा था। वह पंडितजी के पास गया और उनके पास जो ठाकुरजी शलिग्राम थे, उन्हीं की मांग कर बैठा कि ये मुझे दे दो। मैं इनकी अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सारसम्भाल करूंगा। नियमित सेवा-पूजा कर अपने को भाग्यशली मानूंगा।

प्रो. वीर बहादुर सिंह के शब्दों में- ''पंडितजी ने उसकी भगवान में उत्कृष्ठ निष्ठा देख अपनी झोली से वह विग्रह निकाल धन्ना को दे दिया और समझाया कि नित इनकी सेवा करना, स्नान कराना और दीपक से आरती करना। नहा-धोकर प्रसाद बना पहले इन्हें भोग लगाना फिर बाद में खुद ग्रहण करना। यह नियम कभी तोड़ना नहीं। रात को पहले इन्हें सुलाकर फिर सोना। पंडितजी की सभी हिदायतें धन्ना ने मन में बिठा ली।

दूसरे दिन से ही धन्ना ने क्रमानुसार सभी काम किये। भोग के लिए दो रोटी धन्ना ने बनाई और भगवानजी को भोग लगाकर एक रोटी उनके खाने के लिए परोश दी और आग्रह किया कि महाराज खाओ। खुद सामने आसन पर ही बैठ गया। जब उसने देखा कि अनेक बार मिन्नतें करने पर भी भगवानजी नहीं खा रहे हैं। रोज रोटी बनाता, भगवान को एक परोसता और बार-बार आग्रह करता खाने को लेकिन भगवानजी ने नहीं खाई। परेशान होकर एकदिन धन्ना ने भगवानजी को कठोरता से कह दिया, तुम नहीं खाओगे तो मैं भी नहीं खाऊंगा। दो दिन, तीन दिन, चार दिन हो गए भगवान भी भूखे तो धन्ना भी भूखा। अब तो अति हो गई।

फिर एकदिन जोर की बारिश हुई। सब खेत पानी से भर गए। भगवान ने प्रकट होकर कहा- धन्ना मैंने तुम्हारे द्वारा दिये सभी भोग को रोज खाया, मेरा तो अब पेट भर गया है। खेत गीले हो गये हैं, हल-बैल लेकर खेत पर चलो। धन्ना अपना एक बैल और हल लेकर खेत पर पहुंचा तो उसने वहां एक किसान को बैठा पाया।

किसान ने धन्ना को हल में बैल जोतने को कहा और दूसरे बैल की जगह तुम (धन्ना) लग जाओ फिर हल मैं चलाऊंगा। इस प्रकार खेत जुतने लगा लेकिन धन्ना जल्दी ही थक गया तो दूसरे किसान ने कहा- अच्छा तुम हांको और मैं बैल की जगह जुतता हूं। इस प्रकार धन्ना का खेत कुछ ही पल में जुत गया और बीज भी बो दिया। प्रसन्न हो धन्ना अपना हल और एक बैल लेकर घर लौटा। दूसरा किसान चलता बना यह कह कर कि आपका काम तो हो गया, मैं जाता हूं।

कुछ दिनों बाद धन्ना के खेत में बगल के सभी खेतों की अपेक्षा अधिक अच्छी फसल हुई। धन्ना गद्‌गद् हो गया। अब क्या था, धन्ना ईश्वर, विश्वास और मेहनत का महत्त्व जान गया था। अब धन्ना जाट की खेती और दिनोंदिन उन्नति देख लोग धन्ना को पूछते कि क्या गुर लग गया है तुम्हारे हाथ?

धन्ना बोला- गुर तो भगवान की कथा के समय पंडितजी दे गये थे, वही मैंने जीवन में अपनाया और भगवान ने मेरे दिन फेर दिये। अब धन्ना रोज भगवान की पूजा-अर्चना करता, भोग लगाता और खेत पर काम करता। उसने अब एक बैल और खरीद लिया था। लोग उसे अब धन्ना भगत कहने लगे थे।''

- राष्ट्रदूत, 04 अक्टूबर 2023, पृ. 2

राजस्थान प्राकृत अकादमी के अध्यक्ष बने डॉ. धर्मचंद जैन

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान सरकार के कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के अंतर्गत

जोधपुर में 'राजस्थान प्राकृत भाषा एवं साहित्य अकादमी' का गठन किया गया है। डॉ. धर्मचंद जैन को इस अकादमी का प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। उल्लेखनीय है कि देश की प्रतिष्ठित हिंदी मासिक पत्रिका जिनवाणी के प्रधान संपादक भी डॉ. धर्मचंद जैन हैं।

प्राकृत मनीषी डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि अकादमी में अध्यक्ष के अतिरिक्त चार साधारण सभा के सदस्य नियुक्त किए, जिनमें डॉ. प्रेम सुमन जैन, डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन, डॉ. तारा डागा और डॉ. शीतलचंद जैन को मनोनीत किया गया है।

श्रमण डॉ. पुष्पेंद्र के अनुसार प्राकृत अकादमी बनाने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य बन गया है। अकादमी के अंतर्गत प्राकृत एवं जैन भाषा के साहित्य का संरक्षण, संवर्धन तथा अभिवृद्धि के लिए अनेक कार्य किए जाएंगे। इनमें उच्च स्तरीय ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों, साहित्य कोष, शब्दावली एवं ग्रन्थ की निर्देशिका तैयार करना, प्राकृत भाषा का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना, साहित्य सम्मेलन, विचार-गोष्ठियां, परिसंवाद, कवि सम्मेलन, भाषण मालाएं, शिविर, प्रदर्शनियां एवं प्रचार-प्रसार संबंधी समस्त गतिविधियां आयोजित करना, साहित्यकारों को उनकी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए सम्मानित करना आदि कार्य शामिल हैं। राजस्थान प्राकृत भाषा एवं साहित्य अकादमी' की नियुक्तियां करने पर सकल जैन समाज, प्राकृत प्रेमियों और प्राच्यविद्या प्रेमियों ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया है।

- डॉ. दिलीप धींग

अकादमी सम्मान समारोह में 70 लेखक हुए सम्मानित

वेद व्यास को साहित्य मनीषी, रत्नकुमार सांभरिया को मीरां, डॉ. रणजीत को जनार्दनराय नागर तथा नंद भारद्वाज को विशिष्ट साहित्यकार सम्मान

चूरू (ह. सं.)। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा दादाबाड़ी सभागार में आयोजित समारोह में प्रदेश के 70 हिन्दी साहित्यकारों को पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए। अकादमी अध्यक्ष दुलाराम सहारण, मुख्य अतिथि प्रगतिशील लेखक वेद व्यास एवं उपाध्यक्ष सुनीता घोघरा ने साहित्यकारों को सम्मान पत्र भेंट कर सम्मान प्रदान किए।

वेद व्यास ने कहा कि आज का लेखक भयभीत अवस्था में जी रहा है और साहित्य का जो तेवर होना चाहिए, वह दिखाई नहीं दे रहा है। आज ऐसे लेखक नजर नहीं आ रहे हैं जो दलितों और गरीबों के अधिकार के लिए आगे आयें। साहित्यकार को कालजयी होना है तो उसे समय के सत्य को लिखना होगा।

अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने बताया कि अकादमी की ओर अनेक नवाचार किए गए हैं। बंद पुरस्कार शुरू किए गए हैं। लंबित पुरस्कार दिए गए हैं और नए पुरस्कार भी शुरू किए गए हैं। उन्होंने कहा कि लेखकों को क्रूर एवं निरंकुश ताकतों के खिलाफ बोलना चाहिए। बोलने के खतरे भी उठाने होंगे।

सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य-मनीषी' से वेद व्यास को, जनार्दनराय नागर से डॉ . रणजीत को, मीरां पुरस्कार से रत्नकुमार सांभरिया को, चेतन औदिच्य को सुधींद्र, पुरुषोत्तम पोमल को रांगेय राघव, हरीश बी. शर्मा को देवराज उपाध्याय, राघवेंद्र रावत को कन्हैयालाल सहल, रासबिहारी गौड़ को देवीलाल सामर, रोचिका अरुण शर्मा को शंभूदयाल सक्सेना तथा बिलाल पठान को सुमनेश जोशी प्रथम कृति पुरस्कार प्रदान किया गया।

समारोह में सुरेंद्रसिंह को कहानी के लिए, दामोदर शर्मा को कविता के लिए, अमनदीप निर्वाण को एकांकी के लिए, पवनकुमार गुसांई को निबंध के लिए, शुंभागी शर्मा को कविता के लिए, परी जोशी को कहानी के लिए, करुणा रंगा को निबंध के लिए, द्रोपती जाखड़ को लघुकथा के लिए पुरस्कृत किया गया। निबंध के लिए सुधा गुप्ता पुरस्कार कौशल्या जाखड़ को दिया गया।

अमृत सम्मान से भागीरथ परिहार, शंकरलाल स्वामी, देवदत्त शर्मा, लक्ष्मी रूपल, शिवनारायण वर्मा, भवानीशंकर गौड़, रामप्रसाद शर्मा, खुर्शीद अहमद शेख, नवल किशोर भाभड़ा, संतोष कुमार पंछी, विनोद सोमानी हंस, लक्ष्मणलाल योगी, आनंदकौर व्यास, प्रफुल्ल प्रभाकर एवं रमेश छाबड़ा को सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार अरुण माहेश्वरी, अशोक अनुराग, असद जैदी, ओम प्रकाश भाटिया, कृष्णकुमार रत्तू, किशनलाल वर्मा, कौशलनाथ उपाध्याय, गुलाबचंद बारासा, ताराराम मेघवाल, गोविंद शर्मा, प्रमोद चमोली, प्रेमचंद गांधी, मधु आचार्य आशावादी, बनवारी शर्मा खामोश, बंशीधर तातेड़, बृजेंद्र कौशिक, बीएल माली अशांत, बुलाकी शर्मा, नंद भारद्वाज, नरेंद्रनाथ चतुर्वेदी, निशांत, नीरज दइया, रमेश चंद्र वडेरा, राजेश चड्ढा, रेणुका व्यास नीलम, वेद प्रकाश शर्मा वेद, श्याम महर्षि, शकूर अहमद, शंभू गुप्त, श्रवण कुमार मीणा, सत्यदीप भोजक, सूरज पालीवाल, सरला माहेश्वरी, सीएल सांखला, हरदान हर्ष एवं हरिप्रकाश राठी को विशिष्ट साहित्यकार सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रारम्भ में अकादमी कोषाध्यक्ष कमल शर्मा ने स्वागत भाषण दिया। समारोह का संचालन संदेश त्यागी एवं राजूराम बिजारणियां ने किया।

आमेटा ने बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

उदयपुर (ह. सं.)। राजसमंद जिले के घायला गांव निवासी एवं मुंबई में रहने वाले 2 साल 9 माह के अविर शंभूलाल आमेटा ने 2 मिनिट 55 सेंकड में पूरी हनुमान चालीसा बोलकर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है। इससे पहले यह रिकॉर्ड 4 मिनिट 24 सेकंड का था। आमेटा की इस धार्मिक प्रतिभा को संवारने में पिता व मां सुनितादेवी का उल्लेखनीय योगदान रहा।

बाजार / समाचार

पंचतत्व में विलीन हुए वरिष्ठ अधिवक्ता नागौरी

उदयपुर (ह. सं.)। वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं बार एसोसिएशन के पूर्व प्रेसिडेंट एडवोकेट फतेहलाल नागोरी के देवलोकगमन पर शहर के कई राजनीतिक संगठनों, सामाजिक संस्थाओं ने शोक व्यक्त कर अपनी संवेदना प्रकट की। एडवोकेट नागोरी का 06 अक्टूबर 2023 रात को निधन हो गया था। लंबे समय तक कांग्रेसी एवं समाजसेवी के रूप में पहचान रखने वाले नागोरी की अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इस मौके पर उनके पार्थिव देह पर कांग्रेस का तिरंगा ध्वज ओढ़ाकर एक सक्रिय कांग्रेसजन के रूप में सम्मान दिया गया। नागोरी की शव यात्रा उनके निवास से जेल पुलिस बैंड के साथ निकलकर अशोकनगर मोक्षधाम पहुंची। दिवंगत नागोरी लंबे समय तक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, महासचिव आदि महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहे। एडवोकेट नागोरी उदयपुर में हाईकोर्ट बैंच को लेकर आंदोलन की शुरुआत से लेकर अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक आवाज उठाते रहे।

सम्प्रति संस्थान द्वारा आयोजित शोकांजलि में डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि मामाजी स्पष्ट वक्ता, सहृदय तथा स्नेहशील व्यवहार के धनी थे। भीण्डर के बहुत बड़े नागोरी परिवार के लिए वे सदैव गतिशील सम्बल बने रहे। डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि कोई त्यौहार एवं विशिष्ट अवसर ऐसा नहीं आया जब वे बारी-बारी से स्नेहपूवर्क सबको अपने यहां आमंत्रित करते या फिर उनके घर जाकर कुशलक्षेम पूछते और बहिन-बेटी को आवश्यक नेगचार देते।

डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत एवं डॉ. कहानी भानावत ने कहा कि बिना मांगे स्वत: प्रेरित हो चुपचाप आर्थिक सहयोग करना कोई उनसे सीखे। ऐसे अनेक अवसर आये जब वे स्वयं अपने घर से देय लिफाफा ले जाते और सम्बन्धित व्यक्ति-संस्था को देते। वे कभी घोषणाजीवी नहीं बने और अन्यों की टीकाटिप्पणी पर स्पष्ट कहते कि लेने वाला ले रहा है और देने वाला दे रहा है। यह भावना का पक्ष है। जो जैसा करेगा वो वैसा भरेगा।

किरण नागोरी तथा जितेन्द्र मेहता ने नागोरीजी के समाजसेवी व्यक्तित्व के उन पहलुओं को रंखांकित किया जो युवकों के लिए प्रेरणास्पद हैं। एक एडवोकेटे के रूप में भी उनकी छवि सदैव मुखरित रही।

स्टार्टअप एक्सचेंज 4.0 नवंबर में

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की अग्रणी स्टार्टअप एक्सीलरेटर कंपनी मारवाड़ी कैटालिस्ट की ओर से जयपुर में आगामी 4-5 नवंबर को स्टार्टअप एक्सचेंज 4.0 नामक आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के सहभागी गूगल एवं एयू बैंक सहित 50 से अधिक निवेशक घराने भी हैं। इस मेगा इवेंट में एक ही स्थान पर यूनिकॉर्न एवं सूनिकॉर्न के संस्थापक, निवेशक, इंडस्ट्री लीडर्स, न्यू एज स्टार्टअप्स के साथ ही पांच से अधिक राज्यों के प्रमुख सरकारी अधिकारी भी शिरकत करेंगे। स्टार्टअप में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए यह अभूतपूर्व मौका होगा जहां पर वह स्टार्टअप कम्युनिटी से मिल पाएंगे एवं अपने संबंध स्थापित कर पाएंगे, साथ ही नए स्टार्टअप की दिशा में अपने कदम बढ़ा पाएंगे।

मारवाड़ी कैटालिस्टस के संस्थापक सुशील शर्मा ने बताया कि उद्यमिता में रुचि रखने वाले युवाओं एवं युवा उद्यमियों को यहां नेटवर्किंग का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा साथ ही आइडिया को एक सफल स्टार्टअप में बदलने के टिप्स भी दिए जाएंगे जिसमें शुरुआती निवेश से लेकर फंडिंग प्राप्त करना भी शामिल है। यह इवेंट एक प्रकार का प्लेटफार्म साबित होगा जहां निवेशक एवं उद्यमी आपस में जुड़कर एक दूसरे का सपोर्ट सिस्टम बनेंगे। यह आयोजन राजस्थान में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने, वित्तीय संसाधनों के अधिक प्रवाह को सुनिश्चित करने और स्टार्टअप के सतत विकास को सुनिश्चित करेगा। उल्लेखनीय है कि मारवाड़ी कैटालिस्ट भारत के टियर 2 एवं 3 शहरों में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने में प्रयासरत है। इसकी स्थापना जोधपुर में हुई थी और अब जयपुर सहित मुंबई एवम् बैंगलोर में भी कार्यालय स्थापित किए गए हैं। शर्मा के प्रयास इस आयोजन के द्वारा एक मिलियन डॉलर तक का निवेश लाने का है।

मारवाड़ी कैटालिस्ट के वूमेन इनीशिएटिव का नेतृत्व करने वाली निदेशक डॉ श्वेता चौधरी ने कहा कि इस आयोजन में महिला उद्यमियों के द्वारा संचालित स्टार्टअप्स को प्रदर्शित किया जाएगा साथ ही महिलाओं के नेतृत्व में आगे बढ़ने वाले उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

400 सरकारी स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम स्थापित करने की घोषणा

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक परिवर्तन ने राजस्थान के 26 जिलों के 400 सरकारी स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम स्थापित करने की घोषणा की है। इस पहल से, स्कूलों को 55 इंच के स्मार्ट टीवी, 4 टीबी हार्ड डिस्क सीपीयू, स्पीकर, 4-6 घंटे के पावर बैक के साथ यूपीएस आदि जैसे उन्नत व्यूज्युअल लर्निंग और शिक्षण संसाधनों की सुविधा मिल सकेगी, जिससे छात्रों को डिजिटल शिक्षण सीखने में मदद मिलेगी। इस प्रकार छात्रों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी और शिक्षकों को कक्षा को अधिक कुशलता से संचालित करने के लिए सशक्त बनाया जाएगा।

परियोजना का उद्घाटन राजकीय सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सुखपुरिया, सांगानेर, जयपुर में किया गया। इस कार्यक्रम में सरकार के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जिनमें नवीन जैन शिक्षा सचिव, स्कूल शिक्षा, भाषा और पुस्तकालय विभाग और पंचायती राज (प्रारंभिक शिक्षा) विभाग, राजस्थान सरकार, सुश्री निशा उपायुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण, राजेन्द्रकुमार हंस जिला शिक्षा अधिकारी, जयपुर, ओम प्रकाश, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, सांगानेर शहर, जयपुर। इनके अतिरिक्त एचडीएफसी बैंक के अधिकारी उपस्थित जिनमें विनीत धारीवाल, जीआईबी हेड, नरेन्द्र रावत वीपी, जीआईबी, नवनीत अग्रवाल डीवीपी, जीआईबी, (सभी मध्य भारत)।

सुश्री नुसरत पठान, प्रमुख कॉर्पोरेट सोश्यल रेस्पोंसेबिलिटी, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि परिवर्तन सीएसआर स्तंभों के तहत शिक्षा हमेशा हमारे प्रमुख फोकस क्षेत्रों में से एक रही है। हम स्मार्ट स्कूल कार्यक्रम जैसी पहल के माध्यम से इसे बढ़ाने के लिए समर्पित हैं, जहां प्रत्येक छात्र को उन सुविधाओं तक पहुंच प्राप्त होगी जो उनके समग्र विकास में सहायक होंगी। स्मार्ट स्कूल प्रोग्राम का लक्ष्य आधुनिक शिक्षण क्षमताओं से सुसज्जित एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाना है।

हार्टफूलनेस संस्थान के ध्यान शिविर से खिल उठे चेहरे

उदयपुर (ह. सं.)। हार्टफूलनेस संस्थान उदयपुर द्वारा आर्ची आर्केड अपार्टमेंट के रहवासियों के लिए आयोजित हुए तीन दिवसीय ध्यान सत्र का गुरूवार को समापन हुआ। अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि आरएएस अधिकारी एवं हार्टफूलनेस के प्रशिक्षक मुकेश कलाल के नेतृत्व में तीन दिन का ध्यान सत्र आयोजित हुआ। प्रथम दिन रीलैक्सेशन और ध्यान करवाया गया। हार्टफूलनेस के ग्लोबल गाइड कमलेश डी पटेल दाजी एवं मुख्यालय कान्हा शांतिवनम के विडीयो प्रदर्शित किए गए। दूसरे दिन ज़ोन प्रशिक्षक लता पटेल द्वारा आत्म शुद्धीकरण अभ्यास और ध्यान अभ्यास करवाया गया जिसमें ज़ोनल कोऑर्डिनेटर मधु मेहता उपस्थित रही। तीसरे दिन प्रार्थना ध्यान और ध्यान का सत्र ज़ोनल कोऑर्डिनेटर मधु मेहता द्वारा किया गया। इस ध्यान शिविर में जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का समाधान

सत्र भी रखा गया जिसमें ध्यान के मुख्य तत्व प्राणाहूति ऊर्जा, सफ़ाई ध्यान, ध्यान के दौरान विचारों की समस्या, नियमित अभ्यास कैसे करें इत्यादि पर चर्चा की गई। इस पर केन्द्र समन्वयक डॉ. राकेश दशोरा ने प्रकाश डाला।

तीसरे दिन का मुख्य आकर्षक कार्यक्रम हार्टफूलनेस संस्थान के बच्चों का ब्राइटर माइंड शो रहा जिसमें प्रशिक्षिका वरुणिका सिंघवी के नेतृत्व में आशा जैन, मंगला पटेल, हनी तिवारी, आशि गांधी ने ब्रेन व्यायाम और आँखो पर पट्टी बांधकर अंक पहचान, रंग पहचान, नोट के नम्बर पढ़ना, किताब पढ़ना इत्यादि करतब कर सबको स्तंभित कर दिया। प्रशिक्षक मुकेश कलाल ने धन्यवाद देते हुए प्रत्येक बुधवार शाम को साप्ताहिक सामूहिक ध्यान आर्ची आर्केड के हॉल में नियमित करने की घोषणा की। इन तीन दिनों के ध्यान शिविर के बाद सभी संभागियों के चेहरे खिल उठे और नियमित ध्यान अभ्यास का संकल्प व्यक्त किया जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से संतुलित जीवन जीने की कला विकसित हो सके। शिविर में संस्थान के स्वयंसेवक अभय जैन, रंजना भानावत, दीपक मेनारिया, रोशनदीप इत्यादि का सहयोग सराहनीय रहा।

राठौड़ ने सेवा निर्यात संवर्धन परिषद के अध्यक्ष का पद संभाला

उदयपुर (ह. सं.)। आतिथ्य क्षेत्र के उद्यमी करण राठौड़ ने भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा स्थापित सेवा निर्यात संवर्धन परिषद (सर्विसेज़ एक्सपोर्ट प्रोमोशन कौंसिल) के अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। उन्होंने सितंबर 2021 तक एसईपीसी के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। एसईपीसी सेवा निर्यात संवर्धन के लिए एक नोडल संगठन के रूप में भारत के सेवा निर्यात को आगे

बढ़ाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। एसईपीसी की प्रमुख भूमिका में व्यापार संबंधी गुप्त जानकारी प्रदान करना, सक्षम कारोबारी माहौल और नीति के बारे जानकारी प्रदान करना और निर्यात विकास और निर्यात प्रोत्साहन से जुड़ी घटनाओं और गतिविधियों को क्रियान्वित करना शामिल है।

उम्मेद होटल और रिसॉर्ट्स समूह के निदेशक करण राठौड़ के पास 25 वर्षों से अधिक का अनुभव है और वे मेयो कॉलेज अजमेर पूर्व छात्र रहे हैं। अब वे इस प्रतिष्ठित कॉलेज के बोर्ड में सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। वह राजस्थान सरकार की पर्यटन सलाहकार समिति में भी रहे हैं। अपनी नई भूमिका पर एसईपीसी के अध्यक्ष करण राठौड़ ने कहा कि मेरा कार्य 2030 तक भारत की सेवाओं के निर्यात को 1 ट्रिलियन यूएस डॉलर तक पहुंचने के लक्ष्य में एसईपीसी की भूमिका को आगे बढ़ाने का है। हमारा विज़न एसईपीसी को ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित करने, मूल्यवर्धन करने और हितधारकों के लिए व्यावसायिक अवसर लाने का है।

अवनि से अंतरिक्ष तक महिलाओं की पहुंच : कटारिया

धर्म, तप और त्याग में नारी ही सबसे आगे : राष्ट्रसंत चंद्रप्रभ

उदयपुर (ह. सं.)। जैन सोश्यल ग्रुप्स इंटरनेशनल फेडरशन मेवाड़-मारवाड़ रीजन 23-25 की ओर से 14 अक्टूबर को को विशाल महिला सम्मेलन नारी शक्ति-बढ़ते कदम 2.0 सुखाड़िया रंगमंच पर आयोजित किया गया। सम्मेलन के आयोजक उदयपुर के जैन सोश्यल ग्रुप विजय एवं जैन सोश्यल ग्रुप संगिनी विजय थे।

समारोह में मुख्य अतिथि असम के राज्यपाल महामहिम गुलाबचन्द कटारिया ने कहा कि आज चाहे वे महामहिम बन गये हैं लेकिन आज भी अपने आपको समाज के प्रतिनिधि के तौर पर ही देखते हैं। उन्होंने नारी शक्ति को आगे बढ़ाने में सहयोग करने के लिए जैन सोश्यल ग्रुप को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि हमारे भारत में हमेशा से ही नारियों का सम्मान होता रहा है।

जैन समाज में एकता के मुद्दे पर महामहिम ने कहा कि जब तक हमारे सभी आचार्य एक मंच पर बैठ कर सामूहिक और ठोस निर्णय नहीं लेते हैं तब तक जैन समाज में एकता और एक संवत्सरी मनाने का सपना साकार नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि रही बात मांगलिक आयोजनों में इक्कीस व्यंजनों से ज्यादा नहीं बनाने की तो इसके लिए भी प्रयास स्वयं से ही प्रारम्भ करने होंगे। मांगलिक आयोजनों में इक्कीस से ज्यादा व्यंजन बनाने वाले के आयोजन में जाओ और बिना भोजन किये ही लौट आओ।

राष्ट्रसन्त चन्द्रप्रभ ने कहा कि समाज में जब तक समानता का भाव नहीं आएगा नारी सशक्तिकरण की कल्पना नहीं की जा सकती है। चन्दन बाला इसका सबसे बड़ा उदहारण है। हमारी सारी धरती नारी पर ही टिकी है। जो नारी का सम्मान नहीं कर सकता वह भगवान तीर्थंकरों का भी सम्मान नहीं कर सकता है। हमारे यहां हजारों सालों से हर क्षेत्र में नारी का प्रभुत्व रहा है। धर्म, तप और त्याग में भी नारी ही सबसे आगे हैं। केवल बातें करने से महिला सशक्तिकरण नहीं आएगा।

चैयरमेन अनिल नाहर ने स्वागत उद्बोधन में बताया कि तीन वर्ष पूर्व भी फेडरेशन से नारी शक्ति सम्मान समारोह का आयोजन किया था। इस आयोजन के प्रति नारी शक्ति की जो श्रद्धा, उत्साह और समर्पण देखा जा रहा है, उसे देखते हुए आने वाले समय में समारोह का नाम नारी शक्ति के दौड़ते कदम रखना पड़ेगा। उन्होंने समाज में बढ़ते तलाक के मामलों पर आपसी समझाइश के माध्यम से तलाक होने पर अंकुश लगाना, जैन समाज की लगातार घटती जनसंख्या पर चिन्तन करना, सही उम्र में ही शादी करना तथा समाज की घटती जनसंख्या पर संजीदगी से विचार करने पर बल दिया।

अरविन्द बडाला ने स्वागत उद्बोधन दिया। श्रीमती मधु खमेसरा ने आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। संचालन गुणवन्त वागरेचा ने किया। शिल्पा गंगवाल ने 'हर संगिनी में रानी पद्मिनी जैसी ऊर्जा है', डॉ. शैली पोसवाल ने अच्छे स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इस अवसर पर अनिता जैन, अमिता शाह, अभय नाहर, भावना शाह ने भी विचार व्यक्त किये। अरूण माण्डोत, महेश पोरवाल, मोहन बोहरा, सुभाष मेहता, डॉ. आर.एल. जोधावत, पारस ढेलावत, आशुतोष सिसोदिया, हिमांशु मेहता, अर्जुन खोखावत, प्रीतेश जैन, मधु खमेसरा, शकुन्तला पोरवाल, डॉ. कौशल्या जैन, हिम्मत सिसोदिया, निर्मला कोठारी तथा मीना लोढ़ा उपस्थित थे।

समारोह में नारी गौरव अलंकरण अनिला कोठारी, मधु मेहता, विनिता ओर्डिया, डॉ. मधु नाहर, डॉ. दीपाली धींग, रंजना ओस्तवाल, मधु मेहता, अर्चना जैन एवं प्रीति सरूपरिया को प्रदान किये गये। ओसवाल सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रकाश कोठारी एवं पिंकी मांडावत का अभिनंदन किया गया।

कैंसर से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी पर मंथन

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में एसोसिएशन फॉर मेडिकल अपडेट्स की पांचवी वार्षिक दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्घाटन गीतांजली ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल ने

किया। आयोजन अध्यक्ष डॉ. आशीष शर्मा ने बताया कि संगोष्ठी में देशभर से 400 से अधिक कैंसर विशेषज्ञों एवं अन्य डॉक्टर्स ने कैंसर के विषय से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि डॉ. ओ. पी शर्मा एवं डॉ. एफ. एस. मेहता तथा मुख्य वक्ता डॉ. जितेन्द्र मीणा, डॉ. जीवनराम विश्नोई थे।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि एम्स दिल्ली के कैंसर सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ. एस.वी. एस. देव ने स्तन कैंसर सर्जरी पर अपने अनुभव, नवीनतम तकनीक और भविष्य की संभावनाओं पर विचार व्यक्त किये। विभिन्न कैंसर के इलाज में जटिल विषयों पर डॉ. अजय यादव, डॉ. धर्माराम पूनिया, डॉ. आशुतोष मिश्रा, डॉ. रमेश पुरोहित, डॉ. भामिनी जाखेटिया एवं डॉ नलिनी शर्मा ने गहन चर्चा की। आयोजन सचिव डॉ. आशीष जाखेटिया एवं सह-सचिव डॉ रमेश पुरोहित ने बताया कि संगोष्ठी में पहली बार कैंसर सर्वाइवरस ने अपनी कैंसर की लड़ाई के बारे से अनुभव साझा किये। सह-सचिव डॉ अंकित अग्रवाल ने बताया कि संगोष्ठी में 250 से अधिक शोधपत्रों का वाचन किया गया। संगोष्ठी में विशेषज्ञों द्वारा कैंसर रोग में जांच एवं इलाज की अत्याधुनिक तकनीकों को प्रदर्शित किया गया।

इस अवसर पर अंकित अग्रवाल ने महेंद्र राठौड़ को उत्कृष्ट सेवा सम्मान, डॉ. राकेश गुप्ता को मिड-करियर साइंटिस्ट अवार्ड, डॉ. अदिति भंडारी को डॉ. नूतन बेदी मेमोरियल अवार्ड से सम्मानित किया। एएमयू एक्सीलेंस अवार्ड के लिए डॉ. मनजिंदर कौर, डॉ. अरविन्द यादव, डॉ. अपूर्वा अग्रवाल, डॉ. अनामिका व्यास, डॉ. एम. एल. गुप्ता, डॉ. हरचरणसिंह और डॉ. अनीता शर्मा का चयन किया गया। इस अवसर पर एसोसिएशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के नवनिर्वाचित सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। नार्थ जोन से डॉ. राजीव गोयल व डॉ. निपुन प्रिंजा, ईस्ट जोन से डॉ. राकेश गुप्ता, साउथ जोन से डॉ. पद्माकुमार और सेंट्रल जोन से डॉ. अभिषेक शर्मा उपस्थित थे। सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र के लिए डॉ. जसप्रीत कौर एवं डॉ. अजय कुमार, सर्वश्रेष्ठ पोस्टर के लिए डॉ. पार्थ गोस्वामी व डॉ. जगदीश असनानी, यंग साइंटिस्ट अवार्ड के लिए डॉ. अनिता, डॉ. सोहिनी सोनजी व डॉ. नील गाँधी तथा यंग एचीवर अवार्ड के लिए डॉ. आस्था शर्मा को चुना गया।

ध्यान से अतीन्द्रिय...

(पृष्ठ एक का शेष)

दूसरा स्तर है इन्द्रिय का। इन्द्रियां बहुत उपयोगी हैं। जैसे शरीर उपयोगी है, वैसे ही इन्द्रियां भी उपयोगी हैं। इन्द्रियों के बिना व्यक्ति अंधा हो सकता है, बहरा हो सकता है, गूंगा हो सकता है।

इन्द्रियों के बिना कोई काम नहीं होता इसलिए जैन दर्शन में इन्द्रियों पर बहुत विस्तार से प्रकाश डाला गया है किन्तु इसके साथ दो पहलू जुड़े हैं- आसक्ति और अनासक्ति, इन्द्रिय सुख और अतीन्द्रिय सुख।

हम इन्द्रिय सुख को जानते हैं। हर आदमी इन्द्रिय सुख से परिचित है। इन्द्रिय सुख की धारणा ने वास्तविक सुख को ढक रखा है। आप गीता को पढ़ें, कुन्दकुन्द को पढ़ें, आचारांग को पढ़ें, किसी अध्यात्म शास्त्र को पढ़ें, बहुत अच्छा विश्लेषण किया गया है कि इन्द्रिय सुख ने हमारे वास्तविक सुख को आच्छादित कर रखा है। अब तक हमारी धारणा थी, आध्यात्मशास्त्र की घोषणा थी। इसे केवल दार्शनिक तथा आध्यात्मिक आधार पर माना जा रहा था किन्तु अब यह वैज्ञानिक सच्चाई भी बन गई।

तीसरा स्तर है- मन का स्तर। उसके भी दो पहलू हैं। एक पहलू चंचलता का है और दूसरा एकाग्रता का है। सम्यकदर्शन की जो दूसरी उपलब्धि है वह है सूक्ष्म सत्य का दर्शन। हम स्थूल जगत को जानते हैं, सूक्ष्म जगत के नियमों को नहीं जानते। जहां सूक्ष्म सत्य का प्रश्न है, वहां चंचलता बिल्कुल काम नहीं देती। एकाग्रता के बिना सूक्ष्म सत्य को नहीं खोजा जा सकता।

चौथा स्तर है -प्राण का स्तर। प्राण बड़ा महत्त्वपूर्ण है। शायद इसको पकड़ा नहीं गया इसीलिए बहुत सारी समस्याएं उलझती गईं। प्राण हमारे स्वास्थ्य का, हमारी जीवन शक्ति को संचालित करने का बहुत बड़ा माध्यम है। प्राण के संतुलन की प्रेक्षा हमें करनी है।

पांचवां स्तर है- भाव। उत्तरोत्तर हम विकास की ओर जा रहे हैं। शरीर से इन्द्रिय का विकास, इन्द्रिय से मन का विकास, मन से प्राण का विकास। प्राण का आधारभूत तत्व है भाव। भाव जितना शुद्ध होगा, प्राण उतना ही बलवान होगा। भावशक्ति जितनी अशुद्ध होगी, प्राणशक्ति उतनी ही मलिन होती चली जाएगी। सबसे बड़ी शक्ति है भाव-विशुद्धि। भाव की विशुद्धि करके मनुष्य निर्भय हो सकता है।

छठा स्तर है- चित्त का जो हमारे मस्तिष्क विद्यमान है। जो आत्मा और शरीर का संगम स्थल है। आन्तरिक वेतना की रश्मियों का केन्द्र, एक बड़ा पॉवर हाउस और स्टेशन बना हुआ है। भीतर से सारी रश्मियां आती हैं और बाहर का संचालन होता है।

सातवां स्तर है हमारी आत्मा। शरीर से आत्मा की यात्रा। सूक्ष्म तक पहुंचना है, आत्मा तक पहुचना है, मूल तक पहुंचना है, चेतना तक पहुंचना है। इनकी प्रेक्षा कैसे करें? इसका उत्तर है- एकाग्रता और निर्विकल्पता। प्रेक्षाध्यान आत्मा की खोज का साधन है।

प्रशासक का आवेश संयमित, नियंत्रित और संतुलित होना चाहिये। जिसे बात-बात पर आवेश आ जाता है, वह क्या प्रशासन चलायेगा? जो सदा आवेश से भरा रहता है, वह कैसे सफल हो सकता है?

स्वर्ण लेक ज्वेलर्स का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। स्वर्ण लेक ज्वेलर्स के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ रविवार को हुआ। उद्घाटन मेवाड़ राजपरिवार की श्रीमती निवृत्तिकुमारी मेवाड़ द्वारा किया गया। इस अवसर पर निदेशक प्रदीप पोरवाल, कार्तिक पोरवाल, उदयपुर सराफा संघ के अध्यक्ष यशवंत आर्चलिया, निकिता पोरवाल, मोहित पारिख सहित शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

प्रदीप पोरवाल ने बताया कि स्वर्ण लेक ज्वेलर्स द्वारा कई वर्षों से ग्राहकों की सेवा प्रदान की जा रही है। कई ग्राहक वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रतिष्ठान से जुड़े हुए हैं। बीआईएस हॉलमार्क ज्वेलरी का उदयपुर में जबसे चलन हुआ तबसे ही स्वर्णलेक ज्वेलर्स प्रमुख रूप से अग्रणी रहा है। अब समय की मांग, पार्किंग की प्रमुख समस्या एवं ग्राहकों की सुविधा को देखते हुए भट्टजी की बाड़ी, मधुबन में नये शोरूम का शुभारंभ किया है।

कार्तिक पोरवाल ने बताया कि शोरूम में सोना, जड़ाऊ पोलकी, कुंदन, डायमंड चांदी के आभूषणों की विस्तृत रेंज उपलब्ध है। परम्परागत ज्वेलरी जिसमें प्रमुख रूप से गोल्ड तुसी के सेट, कांकण, बाजूबंद, छपाईआड़, नोगरी तथा चांदी के बर्तन, मूर्ति, शुद्ध चांदी के सिक्के एवं ज्वेलरी तथा डायमंड में आईजीआई सर्टिफाइड ज्वेलरी उपलब्ध होगी जो कि शादी-पार्टी में गिफ्ट आर्टिकल के लिए भेंट की जाती है। उल्लेखनीय है कि स्वर्ण लेक ज्वेलर्स का यह दूसरा शोरूम है। इसका पहला शोरूम 30 वर्ष पहले बड़ा बाजार एवं 20 वर्षों से मोती चोहट्टा में संचालित हो रहा है।

विभिन्न जातियों में....

(पृष्ठ तीन का शेष)

नट जाति भी इस परीक्षा से अछूती नहीं है लेकिन परीक्षा का जो सबब है वह राजनटों की अपेक्षा बामणिया नटों में बड़ा कठोर है। इस समाज में जब किसी स्त्री अथवा पुरूष के चरित्र के बारे में खुसुरफुसुर होने लगती है और परिवारवालों के अलावा अन्यों में भी बात फैलने लगती है तो उसे रोका नहीं जा सकता। सामान्य सी हलचल होने पर तो परिवार वाले ही आपसी चर्चा में समझ-समझा लेते हैं पर जब इससे बात बनती नहीं दिखती है और यह लगता है कि इसमें ढील देना भी ठीक नहीं है, ऐसी स्थिति में मोतबीर लोग मिल तय करते हैं और पंच इकट्ठा करते हैं। ये पंच अपनी जाति के ही वरिष्ठ सदस्य होते हैं। उन्हें निमंत्रित किया जाता है। उनके लिए सभी तरह की सुविधाएँ जुटाई जाती हैं।

पंचों को एक जगह इकट्ठा करने का काम हलकारे के जिम्मे रहता है। राजस्थानी ख्यालों-तमाशों में भी हलकारा ऐसा ही महत्त्वपूर्ण पात्र होता है जो राज का संदेश लाने-लेजाने का काम करता है। राजा केसरसिंह के ख्याल में हलकारा कहता है- 'आयो हलकारो राजा केसरसिंह को नेपालकोट स्यूं।'

ऐसी स्थिति में पंच, महिला के श्वसुरगृह के व्यक्ति तथा पीहर पक्ष के लोग किसी निश्चित स्थान पर एकत्र होते हैं। पंच बारी-बारी से महिला, उसके पति तथा उसके परिजनों से पूछताछ करते हैं। दोनों पक्ष खुलकर अपना-अपना पक्ष रखते हैं। स्पष्टीकरण देते हैं। इसमें वे महिला-पुरूष भी अपना पक्ष रखते हैं जो उस घटना के साक्षी होते हैं। पुरूष अथवा महिला के निर्दोष होने पर उन पर लगा लांछन माफ कर दिया जाता है पर यदि दोषी पाये गये तो जैसा दोष वैसी सजा का उनके लिए प्रावधान होता है। इस प्रावधान में -

(1) दोषी द्वारा अपने सिर पर जूता रख गलती कबूल करना।
(2) हलकारा द्वारा दोषी के सिर पर जूते रखवाना।
(3) हलकारा द्वारा सजा के अनुसार जूतों से पिटाई करवाना।
(4) अपराधी के दोनों हाथ पीछे की ओर बांधना।
(5) अपराधी के गले में जूतों की माला डालना।
(6) दोषी को गड्ढे में खड़ा करना।
(7) गड्ढे में खड़ा कर घुटने या कमर तक मिट्टी भरना।
(8) दोषी द्वारा एक हाथ से पत्थर उठावाना।
(9) दोषी द्वारा अंगारों से निकलना।
(10) अंगारों को हाथ में लेकर निश्चित दूरी पार करना।
(11) खौलते तेल की कढ़ाई में हाथ डालना।
(12) खौलते तेल में पूड़ी तलकर हाथ से निकालना।
(13) काला मुँह कर, गधे पर उल्टा बिठा देश निकाला देना।

इस दृष्टि से देखा जाय तो इनकी सामाजिक व्यवस्था बड़ी अनुशासित और संगठित है। सारे झगड़े-टंटे, लड़ाई-फसाद ये अपने समाज की जाजम पर ही निपटाते हैं। बाहरी किसी व्यक्ति का सहारा नहीं लेते। पंच ही इनके लिए परमेश्वर रूप होते हैं। उनका निर्णय निष्पक्ष और सर्वोपरि स्वीकार्य होता है। ऐसे पंच फैसले और परीक्षण इनकी बिरादरी में होते रहते हैं।

कभी-कभी दोषियों की संख्या अधिक होने पर उनकी संयुक्त रूप से भी परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षा अधिकांशत: तो किसी धर्मस्थल पर ही होती है। परीक्षा के बाद समाज वाले मिलकर मनमाफिक गोठ करते हैं।

ऐसा भी होता है जब समाज द्वारा एक बैठक में कोई निर्णय नहीं हो पाता है तब किसी अगले दिन अगली बैठक रखने का निर्णय लिया जाता है। यह भी होता है जब कोई महिला अपने ऊपर मढ़े गये लांछन की जिम्मेदार अपने घर की ही किसी वरिष्ठ महिला को ठहराती है। ऐसी स्थिति में पंचायत संबंधित महिला से पूछताछ करने का निर्णय देती है। 8

ऐसी पूछताछ में कई परतें खुलती हैं। कभी-कभी बेउम्मीद आश्चर्यजनक परिणाम हाथ लगते हैं। ऐसी पंचायतों से कई फायदे भी हमें बताये गये। एक तो यही कि अपनी बात अपनी ही बिरादरी में रहे। माफी दे तो अपना समाज और सजा दे तो भी अपना समाज। दूसरा यह कि बात का बतंगड़ बनने से रह जाता है और इससे उपजने वाली कई तरह की, व्यर्थ की परेशानियां मिट जाती हैं। अन्यों में इस तरह की बात फैलने पर राई का पहाड़ बनते देर नहीं लगती। पूछताछ करने वाले भी इतने हो जाते हैं कि हर एक को उत्तर देते नहीं बनता और फिर आवश्यक नहीं कि जो स्पष्टीकरण दिया जाय वह सर्वमान्य, स्वीकार्य हो।

लेकिन यह प्रश्न तो बार-बार उठता और कचोटता ही है कि ये सारी परीक्षाएं महिला वर्ग की ही क्यों ली जाती है? पुरुषों में ऐसे परीक्षण की आवश्यकता क्यों नहीं उपजी? अकेले पुरुष से तो कभी कोई परिवार या समाज ही नहीं बना। महिला ही हर परिवार, समाज और राष्ट्र की रचयिता और धुरी रही है। यदि वह नहीं हो तो इन सामाजिक सारे सरोकारों का क्या अर्थ रह जाता है? संस्कृति के सारे संदर्भ, कला के सारे औचित्य महिला वर्ग से ही जगमगाहट पाते हैं। बावजूद इसके महिला ही सब ओर पुरुषों की आंख और निशाने पर चढ़ी रहती है। इन्हीं सारे संदर्भों, प्रसंगों और अवसरों को पैनी दृष्टि से निहारते आधुनिक युग की मीरां कही जाने वाली प्रख्यात लेखिका महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियां' में यह सटीक ही लिखा है। वे लिखती हैं-

'स्त्री पुरुष के वैभव की प्रदर्शनी मात्र समझी जाती है और बालक के न रहने पर जैसे उसके खिलौने निर्दिष्ट स्थानों से उठाकर फैंक दिये जाते हैं, उसी प्रकार एक पुरुष के न होने के जीवन का कोई उपयोग रह जाता है न समाज का गृह में उसको कहीं निश्चित स्थान ही मिल सकता है। जब जला सकते थे तब इच्छा या अनिच्छा से उसे जीवित ही भस्म करके स्वर्ग में पति के साथ विनोदार्थ भेज देते थे परन्तु अब उसे मृत पति का निर्जीव स्मारक बनाकर जीना पड़ता है जिसके सम्मुख श्रद्धा से नतमस्तक होना तो दूर रहा, उसे कोई मलिन करने की इच्छा भी रोकना नहीं चाहता। 9

भारतीय पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग-बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उसी प्रकार वह एक स्त्री को भी पालता है तथा अपने पालित पशु-पक्षियों के समान ही वह अपने शरीर और मन पर अधिकार समझता है। हमारे समाज के पुरुष के विवेकहीन जीवन का सजीव चित्र देखना हो तो विवाह के समय गुलाब सी खिली हुई स्वस्थ बालिका को पांच वर्ष बाद देखिये। उस समय उसे असमय प्रौढ़ा, दुर्बल संतानों की रोगिन पीली माता में कौनसी विवशता, कौनसी रूला देने वाली करूणा न मिलेगी?' 10

विश्व में सर्वप्रथम ज्ञान का प्रकाश देने वाले भारतीय पुरुष वर्ग के लिए आजादी के बाद भी क्या यह सवाल चिंतनीय नहीं है?

संदर्भ सूत्र :

(1) पड़ चितेरे श्रीलाल जोशी से भीलवाड़ा में उनके जोशी कला कुंज में हुई बातचीत, 08 जनवरी 1997
(2) राजस्थान की लोकव्रत संस्कृति, डॉ. कविता मेहता, द्रष्टव्य नलराजा-दमयंती रानी की कहानी, पृ. 149-156, सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2009
(3) ईमानदारी की परीक्षा देने गर्म तेल में हाथ डाले, प्रात:काल (दैनिक) उदयपुर, 10 जुलाई 2008, पृ. 8
(4) राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 01 अक्टूबर 2008, पृ. 18
(5) राजस्थान स्वर लहरी भाग एक, डॉ. महेन्द्र भानावत, भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर, 1961, द्रष्टव्य म्हारा छैल भंवर रो कांगसियो गीत, पृ. 61
(6) अग्नि परीक्षा से बच गई महिलाएं, राजस्थान पत्रिका, उदयपुर, 04 नवम्बर 2008, पृ. 9
(7) अजूबा भारत, डॉ. महेन्द्र भानावत, संघी प्रकाशन, जयपुर, 2002, द्रष्टव्य गुप्तांग का गहना, पृ. 141-144
(8) लोककलाओं का आजादीकरण, डॉ. महेन्द्र भानावत, मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर, 2002, द्रष्टव्य सूली ऊपर सेज नटों की, पृ. 59
(9) शृंखला की कड़िया, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 16
(10) शृंखला की कड़िया, महादेवी वर्मा, पृष्ठ 102

खेल-खेल में सृष्टि का विकास और वैभव (2)

- डॉ. पूरन सहगल -

(7) रस्सी कूद :

यह खेल मुख्य रूप से बालिकाओं द्वारा खेला जाता है। इसके अनेक प्रकार हैं। एकतार संख्या होड़, अनेक लड़कियों द्वारा निरंतर रस्सी कूदना और अंत में नाबाद खिलाड़ी को विजेता घोषित करना। दो बालिकाओं द्वारा लम्बी रस्सी के दोनों छोर पकड़कर गोलाकार घुमाना और तीसरी खिलाड़ी द्वारा उसे उलांघते रहना। यह खेल शारीरिक सौष्ठव तथा सुडोलता के लिए बहुत कारगर है। इसे घर के आँगन, छत अथवा कमरे के भीतर भी खेला जा सकता है। शारीरिक व्यायामों में यह सर्वोत्तम है। शरीर के समस्त अंगों का व्यायाम इससे हो जाता है।

(8) कुश्ती :

यह पहलवानी खेल है। भारत में यह अति प्राचीन खेल रहा है। रामायणकाल और महाभारत काल में इसके प्रमाण मिल जाते हैं । इसे मल्ल विद्या भी कहा जाता है। इसका अभ्यास और दावपेंच गुरु ज्ञान व निजी अभ्यास पर निर्भर करता है।

(9) चंगपौ, सोला सार :

दोनों खेल चौपड़ और शतरंज के शैली के सरल ग्रामीण खेल हैं। इन्हें घर आँगन, चबूतरों पर कहीं भी खेला जा सकता है। इमली के बीजों की फाड़े करके पाँसे बना लिए जाते हैं- कंकरों को बैठके। इसी को 'अंग-बंग चौक चंग' कहा जाता है। खेल की चौसर खड़िया या कोयले से बना ली जाती है। इस खेल की प्रक्रिया और नियम सर्वज्ञात हैं। चौसर मांडना भी सहज है। सब कोई जानता है।

(10) पौआ :

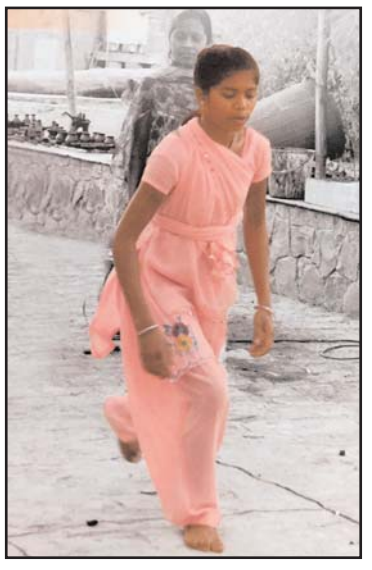

इस खेल में दस चौखटे बनाए जाते हैं। एक लड़की कवेलू या किसी ठीकरी का गोल पासा पहले खाने में फेंकती है। वह लंगड़ी होकर पहले खाने में जाती है और बाहर आ जाती है। इसी प्रकार वह सभी खाने पार करेंगी। पांसा या पौआ, पाली या चौखट की पंक्तियों/रेखाओं को नहीं छूना चाहिए, यह उसके खेल का प्रथम चरण हुआ। दूसरी बार वह पौआ सिर पर रखकर क्रम से सभी चौखटे पार करेगी। तीसरी बार वह कोहनी में पौआ दबाकर उसी क्रम से सभी चौखटे पार करेगी। तीनों चरणों में नाबाद रहने पर वह विजयी मानी जाएगी। ऐसा सभी लड़कियाँ क्रम से खेलती हैं।

(11) पतंगबाजी :

पतंग उड़ाना फिर पतंग काटना। वो काटा ऽऽऽ..... की उल्लास भरी आवाजों के साथ आकाश नापना और गुंजाना

पतंगबाजी का लोकप्रिय खेल सर्वप्रिय है। यह खेल भारत में मकर संक्रांति से सप्ताह भर पहले शुरू होकर एक सप्ताह बाद तक चलता रहता है। संक्रांति से पहले ही बाजारों में पतंगें सज जाती हैं। लड़के-लड़कियाँ, युवक-युवतियाँ सब इस खेल का आनंद खूब लेते हैं। जापान तो विश्व में पतंगबाजी का सर्व प्रसिद्ध देश माना जाता है। विभिन्न आकार एवं विभिन्न रंगों की पतंगें आकाश छूती दिखती हैं।

(12) फूंदी पठाका :

कुछ खेल ऐसे भी होते हैं, जो बहुधा लड़कियों द्वारा ही खेले जाते हैं, उनमें यह खेल है। यह खेल दो लड़कियों की जोड़ी से खेला जाता है। दो लड़कियाँ कैंचीनुमा एक दूसरे के हाथ पकड़ लेती हैं।

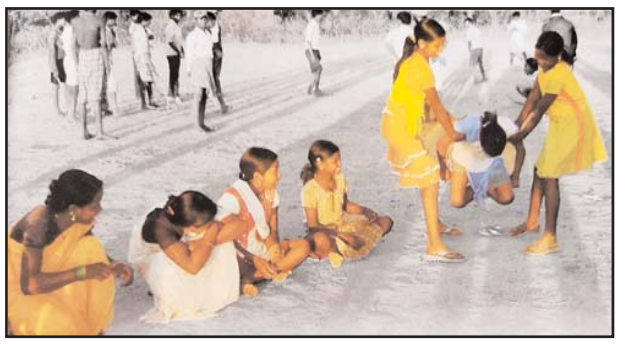

पाँवों के पंजों को पास-पास ले आती है। फिर पैरों के पंजों को जोड़कर पीछे झूल जाती हैं। पैरों के ठस्के से चक्राकार घूमती है। ऐसे चक्राकार घूमने से उनकी वेणियाँ हवा में झूलती दिखती हैं। तब दूसरी लड़कियाँ गीत गाती हैं- 'फूँदी फटाको, जीवे म्हारो वीरो, जीवे म्हारो काको।' गीत लम्बा चलता है। इस गीत से ताल-लय बनती है। इस खेल से लड़कियों में अद्‌भुत देह क्षमता तथा ऊर्जा संचरित होती है। इसे नृत्यों में भी शामिल किया जाता है। मैदान में इस खेल की एकाधिक जोड़ियों एक साथ खेल रचाती हैं। बड़ा मनोरम दृश्य बनता है। जो जोड़ी अंत में नाबाद रह जाती है उसे विजेता घोषित किया जाता है।

(13) धूप ले के छैयाँ :

नदी पहाड़, अंधी दाम, आँख मिचौनी, छुपा-छुपी ये सभी खेल एक जैसे हैं। पकड़ा पकड़ी के दाँव हैं। धूप ले के छैयाँ में एक टोली धूप चुनती है, एक टोली छाँव। नदी-पहाड़ में एक टोली नदी अर्थात्

तल चुनती है, दूसरी पहाड़ अर्थात् चबूतरे। अंधी दाम में आँखों पर पट्‌टी बाँधी जाती है। आँख मिचौनी में सब छुप जाते हैं। दाम वाले की आँखें उनके छुपने तक बंद रहती हैं। छुपा-छुपी में किंवाड़ों के पीछे या अलमारियों के पीछे छुपा जाता है। एक खिलाड़ी ढूँढता है या छूता है। यथा धूप-छैयाँ में यदि दाम वाला छैयाँ मांग लेता है, तब छाया में आने पर वह छू कर उसे आऊट कर देगा। बचाव के लिए पहाड़ अर्थात् चबूतरे पर चढ़ना पड़ेगा। ऐसे ही अनेक खेल हैं, जो लड़कियों व लड़कों द्वारा सरलता से घर के भीतर गली में, आँगन में या मैदान में बालक / किशोर-किशोरियाँ खेल सकते हैं।

(14) लंगड़ी :

इस खेल को किसी चौड़ी गली, सड़क या मैदान में लड़कियाँ खेलती हैं। खेल की चौहद्‌दी तय कर ली जाती है। एक लड़की एक

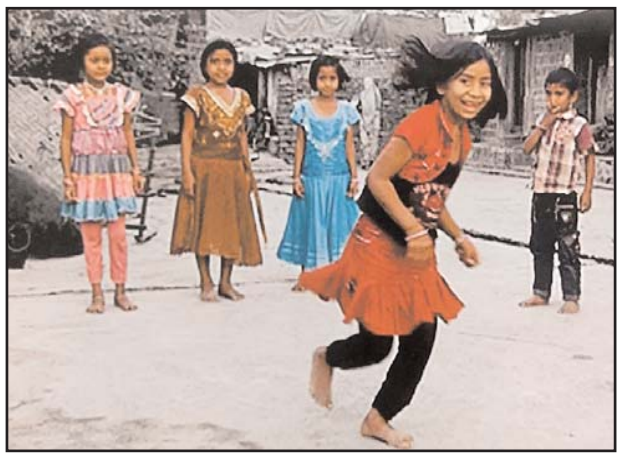

टाँग पर दौड़कर दूसरी लड़की। लड़कियों को घेरकर, दौड़ाकर छूने का प्रयत्न करती हैं। शेष लड़कियाँ स्वयं को बचाती हुई लंगड़ी लड़की को छूने या हल्की चपत लगाने उसके निकट आती हैं, किंतु वह लंगड़ी लड़की उन्हें छू नहीं पाए, इसका भी ध्यान रखती है। यदि वह लंगड़ी लड़की किसी लड़की को छू ले तो दाम उससे उतरकर जिसको उसने छू लिया है, उस पर आ जाता है। दाँव देने वाली लड़की का पाँव यदि जमीन पर टिक जाए, तब उसे हारा हुआ माना जाता है। वह टीम से बाहर हो जाती है। पाँव बदलने का अवसर उसे मिलता है। इसके लिए उसे अपने घर के आँगन में अथवा टीम द्वारा निर्धारित स्थान पर लौटना पड़ता है।

(15) दड़ी मार का हजारिया :

गेंद का ही एक और खेल होता है। एक बड़े मैदान में खिलाड़ी एकत्र हो जाते हैं। एक खिलाड़ी हवा में गेंद उछालता है। उसे जो भी खिलाड़ी झपट लेता है। एक प्रहारक होता है। सब खिलाड़ी उसके गेंद प्रहार को निष्प्रभावी करते हैं, इस बीच वह सबको गेंद से मारता है। गेंद की यह मार बहुत जोर की होती है। यदि कोई खिलाड़ी गेंद

की मार से बचकर उसे झेल लेता है। तब गेंद के प्रहार का अधिकार उसे हो जाता है। इस प्रकार यह खेल चलता रहता है। यह खेल युद्ध अभ्यास जैसा माना जाता है।

(16) खो-खो :

इस खेल में एक दल लम्बी कतार में बैठ जाता है। दल में नौ खिलाड़ी होते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी क्रम से विपरीत दिशा में मुँह करके बैठता है। रनर और बैठी टीम के खिलाड़ी एक-एक दोनों सिरों पर खड़े हो जाते हैं। फिर शुरू होता है सतर्कता और चतुराई का खेल। खिलाड़ी उद्‌घोष करते हैं- 'गूँजे आसमान, छू ले जवान।' पकड़ने छूने की दौड़ शुरू हो जाती है। पकड़ने वाला खिलाड़ी एक

दिशा में दोनों सिरों पर गढ़े थम्बों के वृत्त में दौड़ सकता है, जबकि रनर अपनी दिशा बदल सकता है। पकड़ने वाला खिलाड़ी मौका देखकर बैठे खिलाड़ी को खो कहकर छूता है। बैठा खिलाड़ी रनर को छूने दौड़ता है। पहला खिलाड़ी उसके स्थान पर बैठ जाता है। यहीं पर दोनों खिलाड़ियों की सतर्कता परखी जाती है। छूने वाला खिलाड़ी लपककर रनर को छूना चाहता है। वह गच्चा देकर बच निकालने का प्रयास करता है। खो प्राप्त खिलाड़ी उठते ही जिधर मुँह कर लेता है, उसे उधर ही दौड़ना होता है। इस नियम का लाभ उठाकर रनर भाग निकलता है।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।